सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 65, नई दिल्ली, गुरुवार 15 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशीलता होना अच्छी बात है... पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है!!!

03 दिल्ली में इलेक्ट्रॉनिक सिटी योजना का नवीनीकरण
06 भारतीय सिविल सेवा , भारतीय प्रशासन का एक स्टील फ्रेम
08 बीर जवान देबराज ने त्रिरंगा केलिए अपनी पत्नी को खो दिया

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में आपको आमंत्रित करता है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहा। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

---- सम्मान समारोह -----

दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :- कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :- प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक,
मुख्य अतिथि "श्री शंभू सिंह", आई .ए .एस . सचिव
शिपिंग भारत सरकार (सेवा निवृत्त) शिपिंग मंत्रालय
आमंत्रित विशेष अतिथि
1. श्री चंद्रमोहन आईएएस सेवा निवृत
2. श्री अमर पाल सिंह जॉइंट कमिश्नर, भारत सरकार
3. श्री आर के भटनागर, आईएएस सेवा निवृत
4. साइकिलिस्ट योगेंद्र सिंह, परामर्शदाता
5. श्री एम के गिरी, अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6. श्री अनिल छिक्कारा, उपायुक्त परिवहन सेवा निवृत, परामर्शदाता
7. श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम/अधिनियम परामर्शदाता
8. श्री अजय शाह, सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
9. पायलट अनिल शर्मा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
10. श्री प्रशांत चोपड़ा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
11. श्री राजीव शरद सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
12. डॉ भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूट आफ इन्नोवेटिव टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश)
13. श्री हेतराम
14. श्री अशोक
15. श्री राहुल गुप्ता
16. श्री ए ई कौशिक
17. श्री अशोक सक्सेना
18. श्री अशोक नारंग
19. श्री बरुड ठाकुर अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
20. श्री नरेन्द्र

के साथ भारत देश में जनहित एवम् कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को सम्मान प्रदान किया जाएगा।

'परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से

1. सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2. दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
4. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5. "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर परामर्शदाताओं के विचार आप को प्राप्त होगे। इसके साथ इस समारोह में

1. वक्ताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े श्रेष्ठ एंकर, वीडियोग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

– संजय कुमार बाटला
संपादक

बारापुला फेज-3 फ्लाईओवर को लेकर आया बड़ा अपडेट, राजधानी की जनता को जल्द मिलेगी राहत

संजय बाटला

दिल्ली के लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा है कि बारापुला फेज-3 फ्लाईओवर परियोजना को दिसंबर तक पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। वन विभाग से पेड़ों को स्थानांतरित करने की अनुमति मिलने के बाद शेष कार्य तेजी से पूरा किया जाएगा। इस परियोजना के पूरा होने से मयूर विहार-1 और एम्स के बीच का सफर आसान हो जाएगा।

दिल्ली। दिल्ली के लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) मंत्री प्रवेश वर्मा ने सोमवार को बारापुला फेज-तीन परियोजना स्थल का दौरा किया। उन्होंने कहा कि सरकार इस साल दिसंबर तक बारापुला फेज-3 फ्लाईओवर प्रोजेक्ट को पूरा करने का प्रयास करेगी।

इसके लिए वन विभाग की अनुमति लेकर जल्द ही पेड़ों को स्थानांतरित कराया जाएगा। इसके बाद बचे हुए कामों को जल्द पूरा कराने का प्रयास किया जाएगा।

दरअसल, बारापुला फेज-तीन परियोजना वर्ष 2015 से निर्माणाधीन है। इसके पूरा होने के बाद पूर्वी दिल्ली के मयूर विहार-एक और दक्षिण-दिल्ली स्थित एम्स के बीच सफर सुगम हो जाएगा। नया फ्लाईओवर सराय काले खां में मौजूदा बारापुला फ्लाईओवर से जुड़ेगा।

स्वीकृति प्रक्रिया अंतिम चरण में

पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के मुताबिक, परियोजना का लगभग 89 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। शेष कार्य पेड़ों के स्थानांतरण के लिए वन विभाग की स्वीकृति के अभाव में रुका हुआ है। करीब 250 पेड़ों को हटाने और स्थानांतरित करने की जरूरत है, जिसके लिए स्वीकृति प्रक्रिया अंतिम चरण में है। परियोजना 2014 में स्वीकृत हुई थी और 2015 में निर्माण कार्य शुरू हुआ था। इसे 2017 में पूरा किया जाना था। परियोजना के लिए समय-समय पर स्वीकृतियों में देरी और अन्य तकनीकी अड़चनें रुकावट का कारण बनीं।

यह एक बहुत बड़ी परियोजना है

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में काम में प्रगति हुई है। हमारा लक्ष्य इस साल दिसंबर तक इस फ्लाईओवर को शुरू करना है। यह एक बहुत बड़ी परियोजना है, जिस पर पूर्ववर्ती सरकार ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। इससे परियोजना की लागत में वृद्धि हुई और काम में भी देरी हुई।

उन्होंने कहा कि निर्माण स्थल से पेड़ों को स्थानांतरित करने के लिए लंबित अनुमोदन के मामले पर विचार किया जा रहा है। हमें जल्द ही मंजूरी मिल जाएगी, जिसके बाद परियोजना पूरी की जाएगी। पूर्ववर्ती सरकार ने ठेकेदार को भुगतान नहीं किया। पेड़ काटने की अनुमति के संबंध में पूर्ववर्ती सरकार ने ज्यादा काम नहीं किया इसलिए परियोजना में देरी हुई।

कहा यह सिर्फ एक परियोजना नहीं, बल्कि दिल्ली के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हमारी प्राथमिकता यह है कि कोई भी परियोजना अब लालफीताशाही या लापरवाही का शिकार न हो और सभी लंबित बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं समय पर पूरी हों।

दिल्ली भर में बनेंगे 21 नए फुट ओवरब्रिज, PWD ने बढ़ाया कदम; हजारों लोगों को मिलेगी बड़ी राहत

लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) दिल्ली भर में 21 नए फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) बनाने की योजना बना रहा है। ट्रैफिक पुलिस के प्रस्तावों की मुख्यमंत्री ने समीक्षा की है जिसके बाद जमीनी सर्वेक्षण शुरू हो गया है। ये एफओबी पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन एलएन अस्पताल अजमेरी गेट चौक जैसे कई स्थानों पर बनाए जाएंगे। योजना के अनुसार कुछ स्थान अन्य एजेंसियों के अंतर्गत आते हैं।

नई दिल्ली। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने शहर भर में 21 नए फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) बनाने की योजना बनाई है। ट्रैफिक पुलिस द्वारा दिए गए इन प्रस्तावों की पिछले महीने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने समीक्षा की थी और उसके बाद रिपोर्ट के लिए जमीनी सर्वेक्षण भी शुरू हो गया है। प्रस्ताव के अनुसार जिन स्थानों पर एफओबी की आवश्यकता है उनमें पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के निकास द्वार के पास श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग, मध्य दिल्ली में एलएन अस्पताल के सामने शहीद कैप्टन बत्रा चौक, अजमेरी गेट चौक और मुंगा चौक, बुलेवार्ड रोड, दक्षिण दिल्ली के लाला लाजपत राय मार्ग और कुछ अन्य स्थान शामिल हैं। सरकारी दस्तावेज के अनुसार 21 स्थानों में से कुछ हिस्से भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और दिल्ली विकास प्राधिकरण जैसी अन्य एजेंसियों के अंतर्गत भी आते हैं। एक अधिकारी ने कहा कि इन स्थानों के लिए विभाग संबंधित एजेंसी को सूचित करेगा और फिर आगे क्या किया जाना है, इस पर निर्णय लिया जाएगा।

400 मीटर उखाड़ी गई सड़क से आउटर रिंग रोड पर लगा डेढ़ किमी लंबा जाम

दिल्ली के आउटर रिंग रोड पर 400 मीटर सड़क उखाड़ने से 1.5 किलोमीटर लंबा जाम लग गया। कालकाजी फ्लाईओवर से नेहरू प्लेस फ्लाईओवर तक वाहनों की रफ्तार धीमी हो गई। बारिश और सड़क की मरम्मत के कारण मोदी मिल फ्लाईओवर तक जाम की स्थिति रही यातायात बुरी तरह प्रभावित हुआ।

दिल्ली: आउटर रिंग रोड पर मोदी मिल फ्लाईओवर से नेहरू प्लेस फ्लाईओवर और मां आनंदमयी मार्ग पर कालकाजी से गोविंदपुरी मेट्रो स्टेशन तक दोनों लेन पर मंगलवार को भीषण जाम रहा।

पीक आवर होने के चलते देररात तक वाहन रेंगते नजर आए। आउटर रिंग रोड पर कालकाजी फ्लाईओवर से नेहरू प्लेस फ्लाईओवर तक 400 मीटर तक की सड़क मरम्मत के लिए दो दिन पहले उखाड़ी गई है। यह हिस्सा संकरा भी है और यहां हल्का मोड़ भी है।

शाम को वर्षा होने और उखड़ी सड़क पर रफ्तार कम होने की वजह से पीछे मोदी मिल फ्लाईओवर तक करीब डेढ़ किलोमीटर लंबा जाम लग गया। यातायात कर्मी ने कड़ी मशक्कत के बाद रात नौ बजे तक जाम खुलवाकर यातायात सुचारू कराया।

दो दिन पहले पीडब्ल्यूडी ने उखाड़ी है सड़क

दरअसल, आउटर रिंग रोड पर कालकाजी फ्लाईओवर से नेहरू प्लेस फ्लाईओवर तक 400 मीटर तक की सड़क को मरम्मत के लिए दो दिन पहले ही पीडब्ल्यूडी ने उखाड़ी।

कालकाजी फ्लाईओवर से 200 मीटर आगे बायीं ओर सड़क थोड़ी कर्व है और संकरा भी। नुक्कड़ पर ही प्राचीन भैरव मंदिर है। दर्शन करने वाले किनारे ही वाहन पार्क कर देते हैं, जिससे सड़क और संकरी हो जाती है।

मंदिर से आगे पेट्रोल पंप और उसके आगे सीएनजी स्टेशन है। वाहनों में सीएनजी के लिए सड़क पर भी लाइन लगी है, जिसकी वजह से भी शाम के समय पीक समय में जाम लगता है। शाम को आंधी-बारिश के बाद इस हिस्से में किनारों पर कुछ जगह जलभराव हो गया।

मोदी मिल फ्लाईओवर तक आने व जाने वाले लेन पर जाम लग गया

किनारे चलने वाले बाइक चालक बीच रोड चलने लगे। खराब सड़क होने के चलते बाइक सवार बचते हुए चल रहे थे। वहीं उन्हें बचाने में कार या अन्य वाहन चालकों को बार-बार ब्रेक लेना पड़ रहा था। इसके चलते नेहरू प्लेस फ्लाईओवर तक वाहन की रफ्तार एकदम से कम होती गई।

इसके चलते पीछे मोदी मिल फ्लाईओवर तक आने व जाने वाले लेन पर जाम लग गया। मां आनंदमयी मार्ग से नेहरू प्लेस आने वाले वाहनों के पहिए भी थम गए। ट्रैफिक विभाग के मुताबिक बारिश की वजह से कुछ इलाकों में शाम के समय जाम लगा रहा।

भैरव मंदिर के पास जो भी वाहन खड़े हो रहें हैं, उन्हें हटवाया जाएगा। वहीं सीएनजी स्टेशन के पास भी वाहनों की कतार को व्यवस्थित कराया जाएगा।

षष्ठी देवी के व्रत से होती है संतान की रक्षा

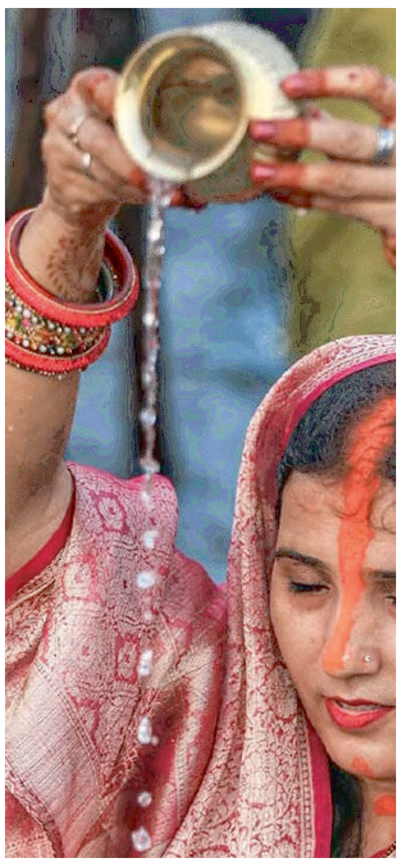

शुभा दुबे

बालकों को दीर्घायु बनाना तथा उनका भरण पोषण एवं रक्षण करना षष्ठी देवी का स्वाभाविक गुण है। अपने आराधकों की सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली ये सिद्धयोगिनी देवी अपने योग एवं प्रभाव से बच्चों के पास सदा विराजमान रहती हैं।

पुराणों में षष्ठी देवी बालकों की अधिष्ठात्री देवी मानी गयी हैं। नवजात शिशु के जन्म के छठे दिन जिन देवी के पूजन की परम्परा है, वे षष्ठीदेवी हैं। लोक भाषा में इसे नवजात शिशु का छठी महोत्सव भी कहते हैं। मूल प्रकृति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण ये षष्ठी देवी कहलाती हैं। इन्हें विष्णुमाया और बालदा भी कहा जाता है। मातृकाओं में ये देवसेना नाम से प्रसिद्ध हैं। स्वामी कार्तिकेय की पत्नी होने का सौभाग्य इन्हें प्राप्त है। बालकों को दीर्घायु बनाना तथा उनका भरण पोषण एवं रक्षण करना इनका स्वाभाविक गुण है। अपने आराधकों की सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली ये सिद्धयोगिनी देवी अपने योग एवं प्रभाव से बच्चों के पास सदा विराजमान रहती हैं।

कौन सा सांप है बड़ा, टाइटनोबोआ या अनाकोंडा?

एक पौराणिक कथा है- प्रियव्रत नाम से प्रसिद्ध एक राजा थे। उनके पिता का नाम था- स्वायम्भुव मनु। प्रियव्रत योगिराज होने के कारण विवाह नहीं करना चाहते थे। तपस्या में उनकी विशेष रुचि थी। परंतु ब्रम्हाजी की आज्ञा तथा सत्प्रयत्न के प्रभाव से उन्होंने विवाह कर लिया। विवाह के प्रश्चात सुदीर्घ काल तक उन्हें कोई भी संतान नहीं हो सकी। तब कश्यप जी ने उनसे पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और उनकी प्रेयसी भार्या मालिनी को चरु प्रदान किया। चरु भक्षण करने के पश्चात रानी मालिनी गर्भवती हो गयीं। तत्पश्चात सुवर्ण के समान प्रतिभा वाले एक कुमार की उत्पत्ति हुई, परंतु वह कुमार मरा हुआ था। उसे देखकर समस्त रानियां तथा बान्धवों की स्त्रियां रो पड़ीं। पुत्र के असह्य शोक के कारण माता को मूर्च्छा आ गयी।

राजा प्रियव्रत उस मृत बालक को लेकर शमशान में गये और पुत्र को छाती से चिपकाकर दीर्घ स्वर से रोने लगे। इतने में उन्हें वहां एक दिव्य विमान दिखायी पड़ा। शुद्ध स्फटिक मणि के समान जगमगाते हुए उस विमान की रेशमी वस्त्रों से अनुपम शोभा हो रही थी। वह अनेक प्रकार के अद्भुत चित्रों से विभूषित तथा पुष्पों की माला से सुसज्जित था। उसी पर बैठी हुई एक देवी को राजा प्रियव्रत ने देखा। श्वेत चम्पा के फूल के समान उनका उज्ज्वल वर्ण था। सदा सुस्थिर तारुण्य से शोभा पाने वाली उन देवी के मुख पर प्रसन्नता छाई हुई थी। रत्नमय भूषण उनकी छवि बढ़ाये हुए थे। योगशास्त्र में पारंगत वे देवी भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए आतुर थीं। ऐसा जान पड़ता था मानो वे मूर्तिमती कृपा ही हों। उन्हें सामने विराजमान देखकर राजा ने बालक को भूमि पर रख दिया और बड़े आदर के साथ उनकी पूजा स्तुति की। उन्हें प्रसन्न देखकर राजा ने उनसे परिचय पूछा।

भगवती देवसेना ने कहा- राजन! मैं ब्रम्हा की मानसी कन्या हूं। जगत पर शासन करने वाली मुझ देवी का नाम देवसेना है। विधाता ने मुझे उत्पन्न करके स्वामि कार्तिकेय को सौंप दिया है। मैं सम्पूर्ण मातृकाओं में प्रसिद्ध हूं। भगवती मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण विश्व में देवी षष्ठी नाम से मेरी प्रसिद्धि है। मेरे प्रसाद से पुत्रहीन व्यक्ति सुयोग्य पुत्र, प्रियाहीन जन प्रिया, दरिद्र धन तथा कर्मशील पुरुष कर्मों के उत्तम फल प्राप्त कर लेते हैं। राजन्! सुख, दुरूख, भय, शोक, हर्ष, मंगल, संपत्ति और विपत्ति ये सब कर्म के अनुसार होते हैं। अपने ही कर्म के प्रभाव से पुरुष अनेक पुत्रों का पिता होता है और किसी को दीर्घजीवी यह कर्म का ही फल है। गुणी, अंगहीन, अनेक पत्नियों का स्वामी, भार्यारहित, रूपवान, रोगी और धर्मी होने में मुख्य कारण अपना कर्म ही है। कर्म के अनुसार ही व्याधि होती है और पुरुष आरोग्यवान भी होता है। अतएव राजन्! कर्म सबसे बलवान है।

इस प्रकार कहकर देवी षष्ठी ने उस बालक को उठा लिया और अपने महान ज्ञान के प्रभाव से खेल खेल में ही उसे पुनः जीवित कर दिया। राजा ने देखा- सुवर्ण के समान प्रतिभावान वह बालक हंस रहा है। अभी महाराज प्रियव्रत उस बालक की ओर देख ही रहे थे कि देवी देवसेना उस बालक को लेकर आकाश में जाने को तैयार हो गयीं। यह देख राजा के कण्ठ, ओष्ठ और तालु सूख गये, उन्होंने पुनः देवी की स्तुति की। तब संतुष्ट हुई देवी ने राजा से कहा-

राजन्! तुम स्वायम्भुव मनु के पुत्र हो। तीनों लोकों में तुम्हारा शासन चलता है। तुम सर्वत्र मेरी पूजा कराओ और स्वयं भी करो। मैं तुम्हें कमल के समान मुख वाला और यह मनोहर पुत्र प्रदान करूंगी। इसका नाम सुव्रत होगा। यह सर्वगुण सम्पन्न होगा तथा इसमें समस्त विवेश शक्तियां विद्यमान रहेंगी। यह भगवान नारायण का कलावतार तथा प्रधान योगी होगा। इसे पूर्वजन्म की बातें याद रहेंगी। क्षत्रियों में श्रेष्ठ यह बालक सौ अश्वमेध यज्ञ करेगा। सभी इसका सम्मान करेंगे। उत्तम बल से संपन्न होने के कारण यह ऐसी शोभा पायेगा, जैसे लाखों हाथियों में सिंह। यह धनी, गुणी, शुद्ध, विद्वानों का प्रेमभाजन तथा योगियों, ज्ञानियों एवं तपस्वियों का सिद्धरूप होगा। त्रिलोकी में इसकी कीर्ति फैल जायेगी।

इस प्रकार कहने के पश्चात भगवती देवसेना ने उन्हें वह पुत्र दे दिया। राजा प्रियव्रत ने पूजा की सभी बातें स्वीकार कर लीं। यों भगवती देवसेना ने उन्हें उत्तम वर दे स्वर्ग के लिए प्रस्थान किया। राजा भी प्रसन्न मन होकर मंत्रियों के साथ अपने घर लौट आये। आकर पुत्र विषयक वृत्तान्त सबसे कह सुनाया। यह प्रिय वचन सुनकर स्त्री और पुरुष सब के सब परम संतुष्ट हो गये। राजा ने सर्वत्र पुत्र प्राप्ति के उपलक्ष्य में मांगलिक कार्य आरम्भ करा दिया। भगवती षष्ठी देवी की पूजा की। ब्राम्हणों को बहुत सा धन दान किया। तब से प्रत्येक मास में शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि के अवसर पर भगवती षष्ठी का महोत्सव यत्नपूर्वक मनाया जाने लगा। बालकों के प्रसव गृह में छठे दिन, इक्कसीवें दिन तथा अन्नप्राशन के शुभ समय पर यत्नपूर्वक देवी की पूजा होने लगी।

- शुभा दुबे

खांसी दमा सांस फूलना

आज हम आपको पुरानी खांसी सांस फूलना दमा जिसका खांसते खांसते पेशाब निकल जाता हो और मरीज की हालत बहुत बुरी तरह बिगड़ जाती है डॉक्टर लोग उसको पंप देने की सलाह देते हैं उसके लिए एक बहुत बढ़िया योग दे रहा हूँ..

इसको घर पर बनाकर रखें यह बड़ों से लेकर बच्चों तक बहुत ही कारगर दवा है आसानी से मिलने वाली दवाएँ हैं जो बाजार से किसी भी पंसारी की दुकान से मिल जाती।

काली मिर्च 50 ग्राम
सौंठ 50 ग्राम
काकड़ सिंगी 50 ग्राम
पोकर मूल 50 ग्राम
कलौंजी 50 ग्राम

सब को अलग अलग कूटकर बाद में वजन करना है और अच्छी तरह से खरल करें और जंगली बेर के बराबर गोली बना ले और एक गोली सुबह एक गोली शाम अदरक के रस में थोड़ा शहद मिलाकर उसके साथ दें 1 महीने में पूरी तरह आराम होगा बाद में कभी भी दवाई लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी इसको अधिक से अधिक शेयर करें ताकि जरूरतमंद को यह नुस्खा मिल सके।

जगदीशचन्द्र माथुर

जन्म : 16 जुलाई, 1917, खुर्जा, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश
निधन : 14 मई, 1978, नई दिल्ली
स्मृति-शेष

आधुनिक हिन्दी साहित्य के महत्त्वपूर्ण नाटककार एवं एकांकीकार जगदीशचन्द्र माथुर जी हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों में से एक थे,जिन्होंने आकाशवाणी में काम करते हुए हिन्दी की लोकप्रियता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने नाट्यलेखन के साथ ही रेखाचित्र, निबंध, नाट्य आलोचना और शोध के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लेखन किया है। टेलिविज़न उन्हीं के जीवन काल में वर्ष 1949 में शुरू हुआ। हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बड़े लेखकों को वे भी रेडियो में लेकर आए। उन्होंने ही ए.आई.आर. का नाम आकाशवाणी और टीवी का नाम दूरदर्शन रखा था। सुमित्रानंदन पंत से लेकर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे दिग्गज साहित्यकारों के साथ उन्होंने हिन्दी के माध्यम से सांस्कृतिक पुनर्जागरण का सूचना संचार तंत्र विकसित और स्थापित किया था।

माथुर जी का जन्म 16 जुलाई, 1917 को खुर्जा, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा खुर्जा में ही हुई। उच्च शिक्षा युइंग क्रिश्चियन कॉलेज, इलाहाबाद और प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। 1939 में प्रयाग विश्वविद्यालय अंग्रेजी में एम.ए. करने के बाद 1941 में 'इंडियन सिविल सर्विस' में चुन लिए गए। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं दशरथ नंदन; रघुकुल रीति ; भोर का तारा; ओ मेरे सपने; दस तस्वीरें; पंरपराशील नाट्य ; जिन्होंने जीना जाना ; शारदीया; पहला राजा ; कोणार्क ; रीड की हड्डी इत्यादि ।

माथुर जी को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हैं।आज मैं उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर उनके साहित्यिक योगदान का स्मरण करते हुए उन्हें शतशत नमन करता हूँ।

प्रो मनोज कुमार कैन

बढ़ती उम्र के साथ खानपान का ध्यान रखना ज़रूरी

विजय गर्ग

बढ़ती उम्र के साथ शरीर की ज़रूरतें भी बदलती हैं। ख़ासकर 60 वर्ष की उम्र के बाद। मन मीठे और तले जैसे तरह-तरह के व्यंजनों की तरफ आकर्षित होता है। परंतु उम्र के इस पड़ाव में आपका भोजन ऐसा होना चाहिए जो शरीर को ऊर्जा दे, पाचन को सहज बनाए और दिनभर ऊर्जावान और हल्का महसूस कराए। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे, इसके लिए यह ज़रूरी है कि आप अपने खानपान का ध्यान विशेष रूप से रखें। पौष्टिक खानपान शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के साथ-साथ आपको मानसिक रूप से प्रसन्न और ऊर्जावान बनाए भी रखेगा।

तले-भुने खाने से दूरी ज़रूरी

60 की उम्र के बाद शरीर की पाचनशक्ति धीरे-धीरे कम होने लगती है। इस अवस्था में तले-भुने और भारी खाद्य पदार्थ, जैसे- समोसा, कचौरी, चकली, भुजिया आदि पचाना मुश्किल हो जाता है । यह भोजन सिर्फ़ पेट पर भारी नहीं पड़ता, बल्कि गैस, एसिडिटी और थकान का कारण भी बनता है । जब शरीर में लगातार भारीपन रहता है। तो नींद, मनोदशा और ऊर्जा का स्तर भी प्रभावित होता है। अक्सर देखा गया है कि बुज़ुर्गों को हर बार चाय के साथ कुछ कुरकुरा या तला हुआ खाने की इच्छा होती है, लेकिन यह आदत धीरे-धीरे नुक़सानदेह बन सकती है।

बेहतर विकल्प... तेलयुक्त खाने की जगह भुने हुए मखाने, मूंग दाल चीला, ढोकला या जीरा - हींग से तड़की हुई हल्की सबज़ियां खा सकते हैं। ये ना सिर्फ़ स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि शरीर को हल्का और संतुलित भी रखते हैं।

मिठास और मैदे से करें परहेज़

उम्र के इस पड़ाव में मीठा और मैदे से बनी चीजें धीमा ज़हर साबित हो सकती हैं। बिस्किट, केक, मैदे के टोस्ट, मिल्क केक, हलवा या पेड़ा जैसी मिठाइयां देखने में तो लज़ीज़ लगती हैं, लेकिन इनमें पोषण नहीं होता। ये रक्त शर्करा को तेज़ी से बढ़ाती हैं, कब्ज़ को जन्म देती हैं और लंबे समय में मधुमेह, जोड़ों का दर्द और थकान की वजह बन सकती हैं। भोजन के बाद मीठा खाना अच्छा लगता है, लेकिन अब ये आदत नुक़सानदेह हो सकती है। इस आदत को पूरी तरह ख़त्म किए बिना भी हम बेहतर विकल्प दे सकते हैं। बेहतर विकल्प... मीठे के लिए गुड़ - तिल से बने लड्डू, रागी लड्डू, 1-2 खजूर या भोजन के बाद आधा चम्मच गुलकंद ले सकते हैं। मैदे की जगह, मौसम के अनुसार मिलेट्स (जैसे- बाजरा, जौ आदि) की रोटी, सर्बज़ियों के साथ बेसन का टोस्ट और घी वाला पोहा भी बेहतर विकल्प हैं।

ठंडी और खट्टी चीज़ों से बचें

रोज़ भोजन में चटपटा अचार, ठंडी चीजें व पैक्ड ड्रिंक्स शामिल होना आम हो गया है। लेकिन यह आपके शरीर में जलन, उच्च रक्तचाप और वात जैसी समस्याएं बढ़ा सकती हैं। बाज़ार के तीखे और तेल से भरे हुए अचार में अत्यधिक सोडियम होता है, जिससे शरीर में पानी रुकता है और रक्तचाप असंतुलित हो सकता है। इसी तरह, फ्रिज से निकले काफ़ी देर पहले से कटा सलाद, ठंडी लस्सी, कोल्ड ड्रिंक्स या पैक्ड जूस पाचन को बिगाड़ते हैं और शरीर में सूखापन, गैस और थकान पैदा करते हैं।

बेहतर विकल्प... इनके स्थान पर घर में बना नींबू या आंवले का कम तेल मसाले वाला सादा अचार, पुदीना - धनिए की चटनी, जीरे वाली छाछ या गर्म सूप बहुत लाभकारी साबित हो सकते हैं। गर्म सूप पिएं और भाप में पकी सब्ज़यां खाएं। पे में नींबू-पुदीना पानी या जीरा धनिया का उबला पानी शरीर को ठंडक भी देगा और पाचन को भी मज़बूत बनाएगा

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस आज

हर साल 15 मई को अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है।

इसकी शुरुआत संयुक्त राष्ट्र ने की है। इस खास दिन को मनाने का मकसद समाज और समुदाय के बीच परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका का जश्न मनाना है। 21वीं सदी में परिवार की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखकर दुनिया भर में इसकी चर्चा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस एक बड़ा मंच बन चुका है। अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस 150 से अधिक देशों में मनाया जाता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और परिवार से संबंधित मुद्दों पर विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस का महत्व अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस केवल जश्न मनाने का एक मौका नहीं है, बल्कि यह कार्रवाई की अपील है। इसका संदेश है कि परिवार से जुड़ी नीतियों की वकालत करके, विविधता का जश्न मनाकर और पारिवारिक संबंधों को मजबूत करके, हम एक ऐसी दुनिया बना सकते हैं जहां सभी परिवारों को फलने-फूलने का अवसर मिले। अंतरराष्ट्रीय समुदाय इस विशेष दिवस को मनाने के लिए इकट्ठा होते जिससे विश्व स्तर पर एकजुटता और ₹फैमिली फर्स्ट₹ नीतियों के लिए एक नया कमिटमेंट दिखाई देता है।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस का इतिहास यहाँ अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस के इतिहास से जुड़े विभिन्न तथ्यों के बारे में बताया जा रहा हैः

वर्ष 1989 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में परिवार के महत्व पर चर्चा की गई और इस दिन के महत्व को समझाने के लिए एक दिन समर्पित किए जाने पर विचार किया गया।

वर्ष 1994 में संयुक्त राष्ट्र के द्वारा 15 मई के दिन को हर साल विश्व परिवार दिवस के रूप में मनाए जाने का फैसला लिया गया।

वर्ष 1995 में पहली बार 15 मई के दिन विश्व परिवार दिवस मनाया गया।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस क्यों मनाया जाता है? अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस निम्नलिखित कारणों से मनाया जाता है-

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस को मनाए जाने के पीछे का कारण दुनिया भर के लोगों उनके परिवार के साथ जोड़ना और परिवार से संबंधित विषयों को लेकर समाज में जागरूकता बढ़ाना होता है।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने का एक मौका है। यह परिवार केंद्रित नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देने का एक मच है।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस लोगों को उनके परिवार के साथ समय बिताने और घूमने फिरने एवं जश्न मनाने का एक अवसर प्रदान करता है।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस हर साल एक नई थीम पर आधारित होता है।

इस बार संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से विश्व परिवार दिवस की थीम "परिवार और जलवायु परिवर्तन" निर्धारित के गई है।

अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस कैसे मनाएं? यहाँ अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाने के कुछ तरीके बताए गए हैं-

परिवार के साथ समय बिताएं : अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस के दिन अपने परिवार के साथ समय बिताएं। यह बहुत ही ज़रूरी है। अपने माता पिता और बीवी बच्चों एवं भाई बहनों के साथ आप गप्पें लड़ाते हुए विश्व परिवार दिवस को शानदार तरीके से मना सकते हैं।

परिवार के साथ कोई फिल्म देखें : अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस के दिन आप अपने परिवार एक साथ कोई अच्छी फिल्म टीवी अपर लगाकर देख सकते हैं या परिवार के साथ फिल्म देखने थियेटर जा सकते हैं।

परिवार के साथ पिकनिक पर जाएं : अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस के दिन आप परिवार के साथ पिकनिक मनाने बाहर भी जा सकते हैं।

परिवार के साथ भोजन के लिए बाहर जाएँ : आप अंतर्राराष्ट्रीय परिवार दिवस के दिन परिवार के साथ खाने के लिए बाहर जा सकते हैं। आप उन्हें खाने के लिए किसी अच्छे होटल या रेस्टोरेंट में जा सकते हैं।

हिन्दी वर्णमाला का क्रम से कवितामय प्रयोग

अ चानक
आ कर मुझसे
इ ठलाता हुआ पंछी बोला,
ई श्वर ने मानव को तो
उ त्तम ज्ञान-दान से तौला।
ऊ पर हो तुम सब जीवों में
ऋ ष्य तुल्य अनमोल।
ए क अकेली जात अनोखी
ऐ सी क्या मजबूरी तुमको।
ओ ट रहे होंठों की शोख़ी
औ र सताकर कमज़ोरों को।
अं ग तुम्हारा खिल जाता है
अः तुम्हें क्या मिल जाता है.?
क हा मैंने- कि कहो
ख ग आज सम्पूर्ण
ग र्व से कि- हर अभाव में भी
घ र तुम्हारा बड़े मजे से
च ल रहा है।
छो टी सी- टहनी के सिरे की
ज गह में, बिना किसी
झ गड़े के, ना ही किसी
ट कराव के पूरा कुनबा पल रहा है।
ठौ र यहीं है उसमें
डा ली-डाली, पत्ते-पत्ते
ढ लता सूरज
त रावट देता है।
थ कावट सारी, पूरे
दि वस की-तारों की लड़ियों से
ध नधान्य की लिखावट लेता है।
ना दान-नियति से अनजान अरे
प्र गतिशील मानव!
फ़ रेब के पुतलो!
ब न बैठे हो समर्थ?
भ ला याद कहाँ तुम्हें
म नुष्यता का अर्थ.?
य ह जो थी, प्रभु की
र चना अनुपम...
ला लच-लोभ के
व शीभूत होकर,
श र्म-धर्म सब तजकर
ष ड्यंत्रों के खेतों में
स दा पाप-बीजों को बोकर,
हो कर स्वयं से दूर
क्ष णभंगुर सुख में अटके हो
त्रा स को आमंत्रित करते
ज्ञा न-पथ से भटक चुके हो
हिंदी में सुंदर प्रयोग है ।

समय के हम तीन विभाजन करते हैं, अतीत-वर्तमान-भविष्य। ध्यान रहे कि यह समय का विभाजन नहीं हैं

समय तो सदा वर्तमान ही होता है। समय का तो एक ही टेंस है, वर्तमान/प्रेजेंट। अतीत तो सिर्फ स्मृति है मन की, वह कहीं होता नहीं है। भविष्य केवल कल्पना है मन की, वह भी कहीं है नहीं। जो समय है, वह तो सदा वर्तमान में ही है। क्या किसी का कभी अतीत से कोई मिलना हुआ है? या किसी का भविष्य से कोई मिलना हुआ है? जब भी हमारा मिलना होता है, तो वर्तमान से होता है। हम सदा अभी और यहीं, हियर एंड नाउ होते हैं। न तो हम पीछे हो सकते हैं, न आगे हो सकते हैं। हां हम पीछे/अतीत के खयाल में हो सकता है। यह हमारे मन की बात/दशा होती है। और आगे/भविष्य का खयाल भी हो सकता है, वह भी मन की बात/दशा होती है। अस्तित्व वर्तमान में ही होता है, मन अतीत और भविष्य में डोलता रहता है। विशेष बात यह है कि

अस्तित्व वर्तमान है सदा, और मन कभी वर्तमान में नहीं होता। मन कभी 'अभी और यहीं' नहीं होता। जब हम वर्तमान में होतें हैं तो मन विलीन हो जाता है और जब हम मन में होतें हैं तो वर्तमान चूक जाता है। वास्तव में, समस्त ध्यान वर्तमान में रहने की प्रक्रिया है, या यूं कहें कि मन का विलीन हो जाना ही ध्यान है।

फ्लाईओवर, चौराहों और मेट्रो स्टेशनों समेत पूरी दिल्ली में ह्यूमन बैनर के जरिए ''आप'' का जोरदार विरोध-प्रदर्शन

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने बिना कोई लक्ष्य हासिल किए पाकिस्तान के साथ युद्ध विराम करने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फैसले पर ह्यूमन बैनर के जरिए तीखा हमला बोला है। बुधवार को ''आप'' ने दिल्ली के अलग-अलग इलाकों के प्रमुख चौराहों, फ्लाईओवर्स और मेट्रो स्टेशनों पर ह्यूमन बैनर लगाकर जोरदार विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री और भाजपा के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। पार्टी का कहना है कि भारतीय सेना पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) वापस कब्जा कर सकती थी, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति के दबाव में आकर प्रधानमंत्री ने यह सुनहरा मौका गंवा कर भारतवासियों को धोखा दिया है। ''आप'' के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनुराग ढांडा ने कहा कि इतिहास में भारतीय सेना का शौर्य-पराक्रम और प्रधानमंत्री मोदी की कायरता दोनों दर्ज होंगे।

बुधवार को आम आदमी पार्टी ने आइटीओ, कालकाजी, लक्ष्मी नगर, करोलबाग समेत दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में प्रमुख चौराहों, फ्लाइओवर्स और मेट्रो स्टेशनों पर ह्यूमन बैनर लगाकर अमेरिका के दबाव में सीजफायर करने के फैसले का विरोध किया। कालकाजी में ''आप'' नेता विजय शेरियार ने कहा कि पूरा देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूछ रहा है कि उन्होंने पाकिस्तान से इतनी आसानी के साथ सीजफायर क्यों कर दिया? पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय सेना की कार्रवाई को लेकर पूरा देश एकजुट था। साथ ही, आम आदमी पार्टी, कांग्रेस, सपा समेत सभी विपक्षी दल प्रधानमंत्री के साथ खड़े थे। प्रधानमंत्री के पास 56 इंच की छाती दिखाने का यह बड़ा मौका था। लेकिन पीएम मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के दबाव में आकर सीजफायर कर दिया। पाकिस्तान को सबक सिखाने और पीओके वापस लेने का बहुत अच्छा मौका था। लेकिन पीएम मोदी ने यह मौका खो दिया। अब ऐसा अच्छा मौका शायद मिले। आज पाकिस्तान कह रहा है कि उसने भारत को हरा

दिया। सीजफायर के बाद भी पाकिस्तान के ड्रोन भारत की सीमा में देखे जा रहे हैं।

उधर, "आप" नेता शिवानी चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया था और सभी विपक्षी दलों के साथ पूरा भारतीय उनके साथ खड़ा था। हर भारतीय पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष लोगों का बदला लेना चाहता था। जब अमेरिका के राष्ट्रपति से यह खबर मिलती है कि भारत-पाकिस्तान के बीच युद्धविराम हो गया है, तो हर भारतीय तो गहरा धक्का लगा। क्योंकि यह खबर हमारे प्रधानमंत्री या भारतीय सेना से मिलनी चाहिए थी। जब यह मामला भारत पाकिस्तान का है तो हमें सीजफायर की जानकारी तीसरे देश के प्रमुख से क्यों पता चलता है? आज हर एक भारतीय बहुत निराश है। भारत के पास पीओके वापस लेने का बहुत अच्छा मौका था। विपक्ष समेत पूरा भारत नरेंद्र मोदी के साथ था। शायद ऐसा मौका फिर न मिले।

शिवानी चौहान ने कहा कि जब चंडीगढ़ में स्वयंसेवकों की भर्ती की बात थी, तो ढेरों युवा एक साथ आकर कहने लगे कि हम भारतीय सेना और केंद्र सरकार का समर्थन करेंगे। हम भारत के साथ हैं। लेकिन प्रधानमंत्री ने ट्रंप के दबाव में आकर युद्धविराम कर दिया। आज हर भारतीय इस फैसले से बहुत नाराज है और हम इसका विरोध करेंगे। किसी भी राजनीतिक दल ने नरेंद्र मोदी या केंद्र सरकार के खिलाफ कोई बयान नहीं दिया। सभी दलों ने कहा कि हम एकजुट होकर खड़े हैं। लेकिन अमेरिका के दबाव में युद्धविराम घोषित किया गया। इसमें कोई समझौता भी नहीं हुआ। उधर पाकिस्तान युद्ध जीतने का दावा कर रहा है। यह बहुत दुख की बात है कि जब हर भारतीय एकजुट था, तब प्रधानमंत्री ने युद्धविराम करवा दिया।

वहीं, ''आप'' नेता भावना बिधुड़ी ने कहा कि इस ह्यूमन बैनर के जरिए प्रधानमंत्री को साफ संदेश देना चाहते हैं कि पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों पर किए गए हमले का जवाब देना चाहिए था। हमारा देश बहुत मजबूत स्थिति में है। जब युद्ध शुरू हुआ, तो भारत ने पाकिस्तान को धूल चटाई। ऐसे में युद्धविराम करने की जरूरत नहीं थी। विपक्ष के साथ पूरा विश्व भारत के साथ है। विश्व ने भी स्वीकारा कि पाकिस्तान आतंकियों को पनाह देता है। पाकिस्तान विश्व बैंक से मिलने वाला पैसा भी आतंकियों पर खर्च करता है। ऐसे में युद्धविराम करने की आवश्यकता नहीं थी।

जाति आधारित जनगणना के लिए बने कानून: मोर्चा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : जाति आधारित जनगणना और मुसलमानों की कानूनी सुरक्षा को लेकर ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा की ओर से एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर जाति आधारित जनगणना और मुसलमानों की कानूनी सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया।

मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज़ गुलाम सरवर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया बयान का स्वागत करते हुए कहा कि जाति आधारित जनगणना के लिए संसद से विधिवत कानून बनाना आवश्यक है। इस संबंध में उन्होंने सेंसस अमेंडमेंट बिल (सी ए बी) को जल्द से जल्द संसद में पेश करने और वर्ष 2029 से पहले इस लक्ष्य को पूरा करने की मांग की। उन्होंने कहा कि सी ए बी के पास हो जाने के बाद जाति आधारित जनगणना का रास्ता साफ हो जाएगा और तय समय में इसे पूरा किया जा सकेगा, जिससे विपक्ष के शंकाओं का भी समाधान हो सकेगा।

इस मौके पर हाफिज़ गुलाम सरवर ने मुसलमानों की कानूनी सुरक्षा की अहमियत पर भी बल दिया और प्रधानमंत्री से मांग की कि कमजोर मुस्लिम वर्गों को एंटी-अट्रॉसिटी एक्ट में शामिल किया जाए, ताकि देश में धार्मिक आधार पर हो रही राजनीति को रोका जा सके।

मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अब्दुल हकीम हवारी ने सभी मुस्लिम समुदायों से अपील की कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें और जाति आधारित जनगणना में अपनी बिरादरी का नाम ज़रूर दर्ज कराएं, ताकि उनकी भागीदारी स्पष्ट रूप से सामने आ सके।

मोर्चा के सचिव रईस अहमद सैफी और शाहिद रंगरेज़ ने भी इसी संदेश को दोहराते हुए कहा कि यह जनगणना धार्मिक नहीं बल्कि बिरादरी के आधार पर हो रही है। इसलिए जनगणना के फॉर्म में धर्म के कॉलम में ₹इस्लाम₹ और बिरादरी के कॉलम में अपनी संबंधित बिरादरी का नाम ज़रूर लिखवाएं।

जमात सलमानी ट्रस्ट के वकार सलमानी ने भी प्रधानमंत्री की पहल का स्वागत करते हुए सलमानी बिरादरी सहित अन्य पिछड़े मुस्लिम वर्गों से जनगणना में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की। उन्होंने सरकार से यह भी मांग की कि वह पिछड़े मुसलमानों के विकास और सुरक्षा के लिए कानूनी उपाय शीघ्र सुनिश्चित करे।

दिल्ली में इलेक्ट्रॉनिक सिटी योजना का नवीनीकरण, नई विकास रणनीति

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में बापरोला इलेक्ट्रॉनिक सिटी योजना को नए सिरे से लागू किया जाएगा। पिछली सरकार के फैसले रद्द कर दिए गए हैं क्योंकि सरकार अब इस योजना में सीधे निवेश नहीं करेगी। डिजाइन बिल्ट फंड ऑपरेट एंड ट्रांसफर (डीबीएफओटी) मॉडल के तहत डेवलपर्स को आमंत्रित किया जाएगा जो जमीन लीज पर लेकर इलेक्ट्रॉनिक सिटी विकसित करेंगे। इस योजना से सरकार को राजस्व मिलेगा।

नई दिल्ली। बापरोला इलेक्ट्रॉनिक सिटी योजना अब नए सिरे से लागू होगी। इस योजना के क्रियान्वयन को लेकर पिछली सरकार के कैबिनेट फैसलों को रद्द कर दिया गया है। दरअसल, सरकार इतने बड़े बजट वाली इस योजना में अपना पैसा नहीं लगाना चाहती।

सरकार अब इस योजना पर इस तरह काम करेगी कि इसमें सरकार का पैसा भी खर्च न हो और आमदनी भी हो। इसके लिए डिजाइन बिल्ट फंड ऑपरेट एंड ट्रांसफर (डीबीएफओटी) के तहत इस योजना पर काम किया जाएगा।

योजना के लिए डेवलपर्स को आमंत्रण

यानी इस योजना के लिए डेवलपर्स को आमंत्रित किया जाएगा। सरकार प्रोजेक्ट के लिए जमीन डेवलपर्स को लीज पर देगी और इसके लिए सरकार को हर साल डेवलपर्स से राजस्व मिलेगा। डेवलपर्स वहां बनने वाली इलेक्ट्रॉनिक सिटी का डिजाइन तैयार करेंगे और सरकार की मंजूरी लेकर वहां इंडस्ट्रियल सिटी विकसित करेंगे।

इस प्रोजेक्ट में अपना पैसा लगाकर वे तैयार यूनिट्स की जगह को उतने ही सालों के लिए लीज पर देंगे, जितने सालों के लिए उन्हें सरकार से जमीन लीज पर मिली है।

दिल्ली में इलेक्ट्रॉनिक सिटी बनाने की योजना को लेकर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कुछ दिन पहले ही सभी बाधाओं को दूर कर योजना को आगे बढ़ाने के निर्देश दिए हैं।

योजना के लिए सलाहकार भी नियुक्त

दिल्ली सरकार ने बापरोला में बनने वाली दिल्ली इलेक्ट्रॉनिक सिटी के लिए 2023 में अधिसूचना जारी की है। जिसके बाद दिल्ली राज्य औद्योगिक एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (डीएसआईआईडीसी) ने इस योजना के लिए सलाहकार भी नियुक्त किया था। लेकिन तत्कालीन आप सरकार और राजनिवास के बीच तनातनी के कारण योजना पर काम रोक दिया गया था। यहां इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की डिजाइनिंग और निर्माण करने वाली करीब 300 इकाइयां होंगी।

इलेक्ट्रॉनिक सिटी में चार से पांच हजार करोड़ रुपये का निवेश होने की उम्मीद है। इस सिटी के लिए बापरोला में 137 एकड़ में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जाएगा। जिसमें से 81 एकड़ जमीन का इस्तेमाल उद्योग के लिए किया जाएगा।

दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि यहां ऐसे काम किए जा सकते हैं जिससे प्रदूषण नहीं होगा। उनका कहना है कि इस योजना के तहत अगस्त-सितंबर तक डेवलपर्स के लिए टेंडर जारी करने की योजना है। अगले साल 2026 में मार्च-अप्रैल तक वहां काम शुरू करने की रणनीति है। योजना के मुताबिक, इलेक्ट्रॉनिक सिटी विकसित करने के लिए डेवलपर को तीन साल का समय दिया जाएगा।

राजस्थान सरकार इस तरह का कर चुकी है प्रयोग

राजस्थान सरकार के अधीन काम करने वाली सरकारी एजेंसी रीको ने जयपुर शहर के बाहर एक बड़ी कंपनी के साथ मिलकर ऐसा प्रयोग पहले भी किया है। जिसमें उसने अपने खर्च पर औद्योगिक शहर बसाया है। इस व्यवस्था के तहत डेवलपर्स सड़क से लेकर बिजली और पानी तक सभी सुविधाएं मुहैया कराएंगे।

अब हर बूंद का होगा हिसाब — होटल, मॉल और निजी वाणिज्यिक संस्थानों को सीवर के हिसाब से भरना होगा पानी का बिल: प्रवेश साहिब सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली (मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी)

दिल्ली के जल मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने राजधानी में जल के दुरुपयोग पर कड़ा फैसला लेते हुए घोषणा की है कि अब दिल्ली के सभी होटल, बैंक्वेट हॉल, शॉपिंग मॉल, निजी अस्पताल और अन्य बड़े वाणिज्यिक संस्थानों को उनके द्वारा छोड़े गए सीवरेज (गंदे पानी) के आधार पर पानी का बिल चुकाना होगा।

मंत्री ने बताया कि अभी तक इन संस्थानों के पास वैध पानी कनेक्शन या मीटर नहीं है, जिससे सरकार के पास यह जानकारी नहीं है कि वे पानी कहाँ से लेते हैं और क्या भुगतान करते हैं। इसके बावजूद ये संस्थान हर दिन लाखों लीटर गंदा पानी सिस्टम में डालते हैं। इससे सरकार को हर साल सैकड़ों करोड़ का राजस्व नुकसान हो रहा है।

"अब हर बूंद का हिसाब होगा। जो जितना सीवर बहाएगा, उसे उतना ही पानी का बिल देना होगा। मुफ्त में पानी लेकर करोड़ों का मुनाफा कमाने वालों की मनमानी अब खत्म होगी।"

— प्रवेश साहिब सिंह, जल मंत्री, दिल्ली सरकार

नई व्यवस्था के मुख्य बिंदु:

x दिल्ली के सभी बड़े निजी वाणिज्यिक संस्थानों की सीवरेज निकासी के आधार पर पानी की खपत का अनुमान लगाया जाएगा।

x जिनके पास वॉटर मीटर नहीं हैं या जो अपने जल स्रोत का खुलासा नहीं कर सकते, उन्हें सीवरेज बहाव के आधार पर बिल देना होगा।

x यह कदम पानी चोरी पर लगाम लगाएगा और राजस्व की बड़ी हानि को रोकेगा।

x रिकॉर्ड्स की जांच सीवरेज डेटा और नगर निगम के व्यावसायिक लाइसेंस से क्रॉस वेरिफाई करके की जाएगी।

पिछले कई वर्षों से दिल्ली के कई बड़े वाणिज्यिक संस्थान बिना किसी हिसाब-किताब के पानी का उपयोग कर रहे हैं। उनकी पानी की खपत का कोई रिकॉर्ड नहीं है लेकिन सीवरेज निकासी होती रही है। ये संस्थान सार्वजनिक जल संसाधनों का दुरुपयोग कर मुनाफा कमा रहे थे।

"ये टैक्स नहीं है, ये ज़िम्मेदारी है। आप करोड़ों के कारोबार मुफ्त पानी पर नहीं चला सकते। अब हर संस्थान को उसके उपयोग की कीमत चुकानी होगी। सरकार ने स्पष्ट किया है कि यह नीति केवल वाणिज्यिक संस्थानों पर लागू होगी। आम नागरिक, घरेलू उपभोक्ता, झुग्गीवासियों या गरीब तबकों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह फैसला सिर्फ उन लोगों के लिए है जो लाभ के लिए संसाधनों का दुरुपयोग कर रहे हैं।

प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि पिछली सरकारों की अनदेखी के चलते वर्षों तक निजी संस्थान फ्री में पानी लेकर लाखों लीटर सीवर बहाते रहे। अब यह बंद होगा। सरकार पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ एक नया, अनुशासित सिस्टम लेकर आ रही है, जिसमें हर उपभोक्ता को अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी निभानी होगी।

दिल्ली में हैं 32 हजार बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिये, गृह मंत्रालय में हुई बैठक में तय हुई रणनीति, अब तोड़ी जाएंगी झुग्गियां

जाति आधारित जनगणना के लिए बने कानून: मोर्चा

सुरक्षा, शिक्षा और व्यापार, तभी बनेगा नया भारत: हाफिज़ गुलाम सरवर

नई दिल्ली):

जाति आधारित जनगणना और मुसलमानों की कानूनी सुरक्षा को लेकर ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा की ओर से एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर जाति आधारित जनगणना और मुसलमानों की कानूनी सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया।

मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज़ गुलाम सरवर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया बयान का स्वागत करते हुए कहा कि जाति आधारित जनगणना के लिए संसद से विधिवत कानून बनाना आवश्यक है। इस संबंध में उन्होंने सेंसस अमेंडमेंट बिल (सी ए बी) को जल्द से जल्द संसद में पेश करने और वर्ष 2029 से पहले इस लक्ष्य को पूरा करने की मांग की। उन्होंने कहा कि सी ए बी के पास हो जाने के बाद जाति आधारित जनगणना का रास्ता साफ हो जाएगा और तय समय में इसे पूरा किया जा सकेगा, जिससे विपक्ष के शंकाओं का भी समाधान हो सकेगा।

इस मौके पर हाफिज़ गुलाम सरवर ने मुसलमानों की कानूनी सुरक्षा की अहमियत पर भी बल दिया और प्रधानमंत्री से मांग की कि कमजोर मुस्लिम वर्गों को एंटी-अट्रॉसिटी एक्ट में शामिल किया जाए, ताकि देश में धार्मिक आधार पर हो रही राजनीति को रोका जा सके।

मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अब्दुल हकीम हवारी ने सभी मुस्लिम समुदायों से अपील की कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें और जाति आधारित जनगणना में अपनी बिरादरी का नाम ज़रूर दर्ज कराएं, ताकि उनकी भागीदारी स्पष्ट रूप से सामने आ सके।

मोर्चा के सचिव रईस अहमद सैफी और शाहिद रंगरेज़ ने भी इसी संदेश को दोहराते हुए कहा कि यह जनगणना धार्मिक नहीं बल्कि बिरादरी के आधार पर हो रही है। इसलिए जनगणना के फॉर्म में धर्म के कॉलम में ₹इस्लाम₹ और बिरादरी के कॉलम में अपनी संबंधित बिरादरी का नाम ज़रूर लिखवाएं।

जमात सलमानी ट्रस्ट के वकार सलमानी ने भी प्रधानमंत्री की पहल का स्वागत करते हुए सलमानी बिरादरी सहित अन्य पिछड़े मुस्लिम वर्गों से जनगणना में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की। उन्होंने सरकार से यह भी मांग की कि वह पिछड़े मुसलमानों के विकास और सुरक्षा के लिए

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का बड़ा निर्णय, अब हर दफ्तर में लगेगी शिकायत पेटी और तुरंत करना होगा समाधान

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने जन समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए सभी डीएम एसडीएम और सब-रजिस्ट्रार कार्यालयों में शिकायत पेटियां लगाने के निर्देश दिए हैं। शिकायतों की निगरानी मुख्यमंत्री कार्यालय करेगा। उन्होंने भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस और लंबित मामलों का तत्काल समाधान करने की सख्त हिदायत दी है।

नई दिल्ली: दिल्ली में भाजपा की सरकार बने करीब तीन महीने होने जा रहे हैं, मगर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता इस बात से पूरी तरह आश्वस्त नहीं है कि जनता की समस्याओं का अधिकारी पूरी तरह से निराकरण कर रहे हैं।

सरकार को पब्लिक फ्रेंडली बनाने के लिए अब उन्होंने सभी डीएम, एसडीएम और सब रजिस्ट्रार कार्यालयों में शिकायत पेटियां लगाने के निर्देश दिए हैं। लोग यहां किसी भी विभाग से संबंधित अपनी शिकायतें डाल सकेंगे।

इनमें आने वाली शिकायतों की निगरानी मुख्यमंत्री कार्यालय करेगा। मुख्यमंत्री भी इनके बारे में अधिकारियों से चर्चा करेंगी और हल कराएंगी। बैठक में मुख्य सचिव धर्मेंद्र सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

CM ने कहा, भ्रष्टाचार को लेकर जीरो टॉलरेंस की नीति बिल्कुल स्पष्ट

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुधवार को दिल्ली सचिवालय में विभिन्न विभाग प्रमुखों के साथ एक विशेष बैठक की।इस दौरान कहा कि दिल्ली के नागरिकों की शिकायतों का समाधान करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है।

सरकार का उद्देश्य है कि नागरिकों की समस्याओं का जल्द और प्रभावी समाधान हो। इसके लिए सभी विभाग प्रमुख को लंबित शिकायतों के निवारण के लिए तत्काल प्रभावी कदम उठाने के निर्देश जारी किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार को लेकर सरकार की जीरो टॉलरेंस की नीति बिल्कुल स्पष्ट है। किसी भी विभाग में भ्रष्टाचार को किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

किसी भी विभाग में लंबित शिकायतें कतई स्वीकार्य नहीं

इस बैठक में पब्लिक ग्रीवांस मैनेजमेंट सिस्टम (पीजीएमएस) पोर्टल पर विभिन्न विभागों के लंबित जन शिकायतों और उसके निदान को लेकर समीक्षा की गई।

मुख्यमंत्री ने बताया कि आज की बैठक का मुख्य उद्देश्य दिल्ली के नागरिकों की समस्याओं का त्वरित और प्रभावी समाधान सुनिश्चित था।

इसके लिए सभी विभागों को लंबित जन शिकायतों के निवारण के लिए तत्काल कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी विभाग में लंबित शिकायतें कतई भी स्वीकार्य नहीं हैं।

विकसित किया जाएगा इंटीग्रेटेड ग्रीवांस रिड्रेसल सिस्टम

सीएम ने अधिकारियों को वॉट्सएप, मोबाइल एप तथा टोल-फ्री नंबरों के माध्यम से भी जनता की शिकायतें लेने का प्रविधान करने के लिए निर्देशित किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकारों के दौरान जन शिकायतों को लेकर भारी लापरवाही रही। उन्होंने कहा कि पहले समस्याएं सरकार तक पहुंचती ही नहीं थीं और अगर पहुंच भी जाती थीं तो समाधान नहीं होता था।

मगर हमारी सरकार का लक्ष्य एक ऐसा आधुनिक और इंटीग्रेटेड ग्रीवांस रिड्रेसल सिस्टम विकसित करना है जो नागरिकों की आवाज को तुरंत सरकार तक पहुंचाए, उनकी बात सुनी जाए, संवाद हो और त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जा सके।

नो हेलमेट नो फ्यूल नियमों का पेट्रोल पंपों पर हो रहा उल्लंघन, प्रशासन ने दिए ये निर्देश

गाजियाबाद में आए दिन सड़क हादसों में किसी न किसी व्यक्ति जान चली जाती है। इससे बचाव के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने सुरक्षा की दृष्टि से नो हेलमेट नो फ्यूल पॉलिसी लागू की है। इसके तहत यदि दोपहिया वाहन चालक हेलमेट न पहने हों तो पेट्रोल पंप पर उनके वाहन में पेट्रोल नहीं डालने का नियम है।

गाजियाबाद। सड़क हादसों में आए दिन किसी न किसी की जान चली जाती है। इससे बचाव के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने सुरक्षा की दृष्टि से नो हेलमेट नो फ्यूल पॉलिसी लागू की है। इसके तहत यदि दोपहिया वाहन चालक हेलमेट न पहने हों तो पेट्रोल पंप पर उनके वाहन में पेट्रोल नहीं डालने का नियम है।

इस नियम का जिले के पेट्रोल पंपों पर उल्लंघन किया जा रहा है। यह स्थिति तब है जबकि ज्यादातर पेट्रोल पंप संचालकों ने नो हेलमेट नो फ्यूल पॉलिसी की जागरूकता के पोस्टर लगाए हैं।

दिन बुधवार, दोपहर 1:48 बजे

पुराना बस अड्डा स्थित एचपी पेट्रोल पंप पर स्कूटी सवार बिना हेलमेट पहने पहुंचा। उसने पेट्रोल पंप के कर्मचारी से स्कूटी में पेट्रोल डालने के लिए कहा, कर्मचारी ने

दोपहिया वाहन चालक को हेलमेट के लिए टोका तक नहीं, उसने स्कूटी में पेट्रोल डाला। इस दौरान स्कूटी चालक अपने साथ एक केन भी लेकर आया था, उसमें भी उसने पेट्रोल भरवाया। पेट्रोल पंप कर्मचारी ने रुपये लेकर उसे जाने दिया।

दिन बुधवार, दोपहर 2:01 बजे

लोहिया नगर स्थित इंडियन आयल पेट्रोल पंप पर भी नो हेलमेट नो फ्यूल पालिसी का उल्लंघन करते हुए पेट्रोल पंप के कर्मचारी नजर आए। पेट्रोल पंप पर स्कूटी सवार बिना हेलमेट पहने पहुंचा और स्कूटी में उसने पेट्रोल भरवाया। पेट्रोल पंप कर्मचारी ने न तो पेट्रोल देने से मना किया न ही उसे हेलमेट के लिए टोका।

दिन बुधवार, दोपहर 3:13 बजे

अंबेडकर रोड स्थित इंडियन आयल पेट्रोल पंप पर बाइक सवार बिना हेलमेट पहने पहुंचा। उसने पेट्रोल पंप कर्मचारी से बाइक में पेट्रोल डालने के लिए कहा। पेट्रोल पंप कर्मचारी ने बिना कोई रोकटोक बाइक में पेट्रोल डाला और इसकी एवज में भुगतान लेकर उसे जाने दिया।

सड़क हादसों के आंकड़े

वर्ष	हादसों की संख्या	मृतकों की संख्या	घायलों की संख्या
2024	919	350	712
2023	907	333	647
2022	809	338	580

सभी पेट्रोल पंप संचालकों को नो हेलमेट नो फ्यूल पॉलिसी का पालन कराने के निर्देश दिए गए हैं। यदि नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है तो जांच की जाएगी। पेट्रोल पंपों पर निरीक्षण किया जाएगा, शासनादेश को सख्ती से लागू कराया जाएगा। - अमित तिवारी, जिला पूर्ति अधिकारी।

अवैध प्लॉटिंग करने वाले भूमाफिया के मंसूबे ध्वस्त, 30 करोड़ की जमीन पर गरजा बुलडोजर

नोएडा प्राधिकरण की जमीन पर कब्जा कर अवैध प्लाटिंग कर रहे भूमाफिया के मंसूबों पर पानी फिर गया। दरअसल प्राधिकरण की वर्क सर्किल सात की टीम ने बुधवार को यहां पर बुलडोजर से कार्रवाई की। बता दें नोएडा प्राधिकरण ने दावा कते हुए कहा कि का कब्जा मुक्त जमीन 30 करोड़ की है। इस लेख के माध्यम से पढ़िए पूरी खबर।

नोएडा। प्राधिकरण की अधिसूचित क्षेत्र की जमीन पर कब्जा कर अवैध प्लाटिंग कर रहे भूमाफिया के मंसूबों को प्राधिकरण की वर्क सर्किल सात की टीम ने बुधवार को ध्वस्त कर दिया। सैमसंग के पीछे सेक्टर-81 स्थित सलारपुर में 10 हजार वर्गमीटर जमीन अवैध कब्जे से मुक्त कराया। जमीन की कीमत कीमत 30 करोड़ रुपये आंकी जा रही है।

बता दें कि मास्टर प्लान 2031 के अनुसार इस जमीन का प्रयोग औद्योगिक क्षे9 के रूप में किया जाना है। यहां तमाम औद्योगिक इकाइयों का संचालन कराकर हजारों लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की योजना है। बता दें कि जिन लोगों ने यहां अवैध निर्माण किया था अब उनके खिलाफ प्राधिकरण की ओर से एफआईआर दर्ज की जा रही है।

खसरा नंबर 244 और 245 पर अवैध रूप से हो रही थी प्लॉटिंग

प्राधिकरण वर्क सर्किल सात वरिष्ठ प्रबंधक सतेंद्र गिरी ने बताया कि सलारपुर गांव में खसरा नंबर 244 और 245 पर अवैध रूप से प्लाटिंग की जा रही थी। यहां अवैध रूप से कॉलोनी का निर्माण किया जा रहा था। जानकारी मिलने पर नोटिस जारी किया गया।

नहीं मानने पर प्राधिकरण की टीम ने जेसीबी की मदद से अवैध निर्माण को ध्वस्त कर कब्जा लेकर अपना बोर्ड लगा दिया है। जमीन प्राधिकरण की अधिसूचित जमीन है। दो दिन पहले ही नोएडा प्राधिकरण ने बैठक कर स्पष्ट किया था कि अधिसूचित जमीन पर अवैध निर्माण नहीं होना चाहिए। इसे ध्वस्त किया जाए।

118 मामलों में डीसीपी स्तर पर जांच जारी

प्राधिकरण ने एडवाइजरी जारी कि इस क्षेत्र में भूखंड खरीदने और बेचने के लिए भूमाफिया के चंगुल में न आए। प्राधिकरण ने जनवरी 2024 से अब तक करीब 1.93 लाख वर्गमीटर जमीन को अतिक्रमण मुक्त किया गया। इस जमीन की लागत दो हजार करोड़ रुपये आकी गई है।

इसके अलावा अभियान निरंतर जारी है। इसके अलावा जमीन अतिक्रमण और अवैध निर्माण को लेकर अब तक 24 मामलों में एफआईआर दर्ज की गई है। जबकि 118 मामलों में डीसीपी स्तर पर जांच की जा रही है। इन मामलों में भी जल्द एफआईआर की जाएगी।

करोड़ों के नुकसान वाले कानपुर अग्निकांड में अब तक एक की मौत , पांच गंभीर

- 3 चार पहिया वाहन, 12 ई-रिक्शा और करीब 20 दोपहिया वाहन जलकर हुए राख

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां के कलक्टर गंज की पुरानी गल्लामंडी में करोड़ों के नुकसान वाले भीषण अग्निकांड में अब तक एक व्यक्ति की मौत हो चुकी है। उसका कंकाल आज बुधवार की सुबह बरामद किया गया , जबकि पांच लोग जीवन और मौत के बीच संघर्ष कर रहे हैं।

अवगत कराते चलें कि कल मंगलवार 3:00 बजे के बाद लगी भीषण आग में गल्ला, किराना, मूंगफली और दवा की दुकानें जल गईं। आग की चपेट से आकर 5 सिलेंडर फट गए थे। इस आग में 3 चार पहिया वाहन, 12 ई-रिक्शा और करीब 20 दोपहिया वाहन जलकर राख हो गए थे। आसमान में उठा धुएं का गुबार 3 किमी दूर तक देखा गया था। इस अभूतपूर्व भीषण अग्निकांड में 7 लोग 50 फीसदी से ज्यादा झुलस गए थे। जिसमें एक की मौत हो गई। जलकर मरने वाला शुक्लागंज निवासी गया प्रसाद विश्वकर्मा यही की एक दुकान में कर्मचारी था। आज बुधवारकी सुबह कंकाल और उसके पास के कपड़े देखकर उसकी शिनाख्त उसकी पत्नी उर्मिला ने की।

वही झुलसे 7 लोगों में पांच की हालत लगातार गंभीर बनी हुई है डॉक्टर उनकी जान बचाने की कोशिश लगातार कर रहे हैं। आग लगने की अनुमानित वजह चार्जिंग के समय ई-रिक्शा की बैटरी में विस्फोट बताई गई है। साथ ही अन्य कारणों और अग्निकांड से हुए नुकसान के आकलन की भी जांच जारी है।

जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सोनीपत सचिव एवं मुख्य न्याय दंडाधिकारी महोदय के निर्देश अनुसार कानूनी सेवक संदीप बत्रा द्वारा मुरथल खंड के तहत भुर्री ग्राम पंचायत में ग्राम निवासियों से मुलाकात कर कानूनी सहायता प्राप्त करने बारे जानकारी साझा करने के अलावा साइबर सुरक्षा हेल्प लाइन नंबर लोक अदालत की जानकारी के साथ साथ नैतिक कर्तव्य एवं मौलिक अधिकारों के बारे में जागरूक किया गया इस अवसर पर सुभाष जयकंवर शामलाल हरीश रमेश कृष्ण सतबीर राकेश रोहतास इत्यादि ने गांव की मुख्य सड़क पर कूड़े की समस्या बरसात के मौसम में पानी की निकासी की समस्या पीने के पानी की समस्या स्ट्रीट लाइट की समस्या टूटी हुई सड़कों की समस्या से अवगत करवाया गया

यह अल्पविराम है, युद्ध तो होगा ही !

डॉ. आशीष वशिष्ठ

पाकिस्तान अपने चरित्र के अनुरूप आचरण करेगा, यह मेरा ही नहीं, हर जागरूक नागरिक का अटल विश्वास है। भारतीय नीति और विचार यह है कि हमारे लिए आतंकवाद समाप्त हो जाए तो हमारा संघर्ष और युद्ध समाप्त हो जाएगा।

पहलगाम आतंकी घटना के बाद भारत के वीर जवानों ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान स्थित आतंकी अड्डों को जिस तरह से नष्ट भ्रष्ट किया, विश्वभर में उसका कोई दूसरा उदाहरण सहसा ही स्मरण नहीं आता। आतंकी ठिकानों की विनाश और सैकड़ों आतंकियों के अर्थी एक साथ उठने से बौखलाए पाकिस्तान ने भारतीय शहरों, आम नागरिकों, पूजा स्थलों और सैन्य ठिकानों पर हमले करके जिस अदूरदर्शिता का परिचय दिया उसके बारे में क्या कहा ही कहा जाए।

पाकिस्तानी सेना के हमलों के प्रत्युत्तर में जब वीर भारतीय सैनिकों ने अपने हथियारों का रुख पाकिस्तान की ओर मोड़ा तो तीन ही दिन में पाकिस्तान दया की भिक्षा मांगने लगा। दुनिया में श्रेष्ठ सैनिकों में शामिल भारतीय सैनिकों ने जिस तरह पाकिस्तान के हमलों को कुशलता पूर्वक असफल किया और उसके सैन्य ठिकानों पर अचूक निशाना लगाया है, उससे विश्व की तमाम छोटी—बड़ी शक्तियां अवाक और संज्ञाशून्य की स्थिति में है। दोनों देशों के डीजीएमओ की बातचीत के बाद मौखिक संघर्ष विराम हो चुका है। पाकिस्तान की प्रवृति, चरित्र और इतिहास के आलोक में एक बात स्पष्ट तौर पर जान लीजिए, या गांठ बांध लीजिए, आज नहीं तो कल युद्ध तो होना ही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 मिनट के अपने सटीक, संतुलित और सारगर्भित संबोधन में पाकिस्तान के दुष्ट आचरण और दुष्प्रवृति को समस्त विश्व के समक्ष निरावृत करने में कोई कसर शेष नहीं छोड़ी। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से साहसी भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान को जितनी गहरे घाव दिये हैं, वो उसकी आने वाली संततियों को भी विस्मृत नहीं होंगे। वर्ष 1948, 1965, 1971 और 1999 में पाकिस्तान से हुए युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को इतनी बुरी तरह से नहीं पीटा, जितना ऑपरेशन सिंदूर में उसको क्षति पहुंची है। जितने गहरे घाव उसे इस बार वीर भारतीय सैनिकों ने दिये हैं, वो अगर पूर्व में दिये गये होते तो यह दिन देखने की आवश्यकता नहीं होती। एक दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव में पाकिस्तान हर बार बचता रहा। और हमारे सैनिक चाहकर भी पाकिस्तान को छोड़ते रहे। लेकिन वर्तमान में पीएम मोदी की सरकार ने जिस दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिचय दिया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वो कम ही है।

साहसी भारतीय सेना के हमलों से हो रहे प्रत्यक्ष और संभावित नुकसान के दृष्टिगत पाकिस्तान अपने आका अमेरिका की शरण में गया, लेकिन उसे वहां से भी कोई संतोषप्रद आश्वासन प्राप्त नहीं हुआ। अंततोगत्वा पाकिस्तान के मिलट्री ऑपरेशन के डीजी ने अपने भारतीय समकक्ष से संपर्क साधा। भारतीय सेना ने अपने संकल्पों, नियमों और इच्छा अनुकूल संघर्ष विराम की उद्घोषणा की। संघर्ष विराम का क्रेडिट लेने का भरपूर प्रयास अमेरिका और उसके राष्ट्रपति ट्रम्प ने किया। लेकिन भारतीय सेना की ब्रीफिंग और पीएम मोदी के संबोधन ने अमेरिका के सारे दावों की वायु निकाल दी।

एक प्रसिद्ध कहावत है, चोर चोरी से जाए, हेरा फेरी से न जाए। और पाकिस्तान ही वह चोर है, जो हेरा फेरी से बाज नहीं आएगा। संघर्ष विराम की घोषणा के बाद भी उसके आचरण में अधिक परिवर्तन देखने को नहीं मिला। इसलिए भारत सरकार और पीएम मोदी ने स्पष्ट संदेश पाकिस्तान को दिया है कि भविष्य में आतंक की घटना को युद्ध माना जाएगा।

पाकिस्तान अपने चरित्र के अनुरूप आचरण करेगा, यह मेरा ही नहीं, हर जागरूक नागरिक का अटल विश्वास है। भारतीय नीति और विचार यह है कि हमारे लिए आतंकवाद समाप्त हो जाए तो हमारा संघर्ष और युद्ध समाप्त हो जाएगा। उसे हम अपनी जीत मान लेंगे। लेकिन पाकिस्तान के लिए यह लड़ाई कभी समाप्त नहीं होगी क्योंकि उसका वास्तविक लक्ष्य है भारत को मिट्टी में मिलाना है। उसका जन्म ही भारत से घृणा के आधार पर हुआ है। जब तक भारत है, तब तक पाकिस्तान की लड़ाई है। तो भारत का होना, भारत की उपस्थिति, भारत का अस्तित्व ये पाकिस्तान के लिए जोखिम है। वो इसी जोखिम को समाप्त करने का प्रयास करता रहता है।

भारत को मिट्टी में मिलाने के पाकिस्तान ने पहले युद्ध के माध्यम से प्रयास किए। जब उसने यह देखा कि युद्ध में हानि अधिक है, और वह अपने लक्ष्यों का प्राप्त नहीं कर पा रहा है तो उसने छद्म युद्ध शुरू किया। इस छद्म युद्ध के अंतर्गत आतंकवादियों का संरक्षण, प्रशिक्षण देकर भारत में अशांति फैलाने की नीति पर चलना शुरू किया। इसमें कोई बड़ा खर्च भी नहीं है। शस्त्र क्रय करने के लिए उसे धन अमेरिका, यूरोप, तुर्की और चीन दे ही देते हैं। अफगान युद्ध का उसने खूब लाभ उठाया। अमेरिका से उसने पैसा भी लिया, हथियार भी लिए। पहले रूस से लड़ने के लिए, फिर अफगानिस्तान से लड़ने के लिए। अमेरिका को भी धोखा देता रहा। ओसामा बिन लादेन को अपने यहां छुपा कर रखा और अमेरिका को पता नहीं लगने दिया। आखिरकार अमेरिका ने खोज लिया और खोज कर मारा।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि पाकिस्तान किसी को भी धोखा दे सकता है। और भारत को तो हमेशा धोखा ही देगा। पाकिस्तान की एक बात पर हमेशा विश्वास करना चाहिए कि उस पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए। वो हमेशा दगा देखा, हमेशा धोखा देगा। इसलिए वो चाहे कोई भी वायदा करे तब भी उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए कि वो भविष्य में आतंकवाद का साथ नहीं देगा। वो सिर्फ अवसर की प्रतीक्षा करेगा। वर्तमान में जो स्थितियां वहां भारत के हमले के बाद उपजी हैं, उसके चलते पाकिस्तान की सेना और सरकार आमजन में अपनी छवि और साख को बनाए रखने के लिए भारत को नुकसान पहुंचाने में पीछे नहीं हटेगा। ये बात गांठ बांध लीजिए। ये संघर्ष विराम उसे इसीलिए चाहिए था, सांस लेने का अवसर। जो घाव भारतीय सेना ने उसे दिये है, उन पर मरहम पट्टी का अवसर चाहिए था। उसे फिर से तैयारी का अवसर चाहिए था। फिर से आतंकवादी गतिविधियों की रणनीति बनाने का समय और मौका चाहिए था। उसे तीन वस्तुओं की आवश्यकता थी। समय, पैसा और हथियार। और उसको ये तीनों चीजें संघर्ष विराम ही दिला सकता था। और उसे संघर्ष विराम मिल चुका है।

विश्व में पाकिस्तान की ही नहीं, अमेरिका की छवि धोखेबाज देश की है। विश्व भर में उसकी धोखेबाजी के किस्सों की लंबी सूची है। और जहां तक बात भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की है। जब भी दोनों देशों के बीच तनाव होगा, संघर्ष होगा, अमेरिका का झुकाव पाकिस्तान की ओर होगा। अमेरिका को भारत की जरूरत है, चीन पर नियंत्रण के लिए। जब तक ये जरूरत नहीं थी तब तक अमेरिका भारत का विरोध ही करता रहा। मेरा मानना है कि संघर्ष विराम की घोषणा करके भारत अपनी शराफत में मारा गया। भारत अमेरिका पर जरूरत से ज्यादा विश्वास के कारण मारा गया।

यह बात जान लीजिए कि संघर्ष विराम के लिए पाकिस्तान की आतुरता का मुख्य कारण यह था कि उसे लगा कि पहले अपने अस्तित्व को बचाना आवश्यक है। वो उस नीति पर चल रहा था कि बचेंगे, तो भविष्य में लड़ेंगे। तो उसने अपना बचाव कर लिया है। और वह भविष्य में लड़ेगा यह मान कर चलिए। निकट समय में ही आपको किसी ने किसी आतंकवादी घटना का दुखद समाचार सुनने, देखने और पढ़ने को मिलेगा। पाकिस्तान रुकने वाला नहीं है। वास्तव में जिस दिन पाकिस्तान आतंकवाद रोक देगा, उसके अस्तित्व का औचित्य ही समाप्त हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हमारे सैन्य बल पाकिस्तान के चरित्र से परिचित हैं। इसलिए राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में पीएम मोदी ने तमाम अहम बातों के अलावा यह भी स्पष्ट कर दिया की ऑपरेशन सिंदूर अभी स्थगित ही हुआ है। अर्थात यह कि आतंक के विरुद्ध भारत का एक्शन जारी रहेगा।

पाकिस्तान अपने चरित्र के अनुरूप आचरण करेगा, यह मेरा ही नहीं, हर जागरूक नागरिक का अटल विश्वास है। भारतीय नीति और विचार यह है कि हमारे लिए आतंकवाद समाप्त हो जाए तो हमारा संघर्ष और युद्ध समाप्त हो जाएगा। उसे हम अपनी जीत मान लेंगे। लेकिन पाकिस्तान के लिए यह लड़ाई कभी समाप्त नहीं होगी क्योंकि उसका वास्तविक लक्ष्य है भारत को मिट्टी में मिलाना है। उसका जन्म ही भारत से घृणा के आधार पर हुआ है। जब तक भारत है, तब तक पाकिस्तान की लड़ाई है। तो भारत का होना, भारत की उपस्थिति, भारत का अस्तित्व ये पाकिस्तान के लिए जोखिम है। वो इसी जोखिम को समाप्त करने का प्रयास करता रहता है।

रेनॉल्ट कारें पर मई 2025 में बंपर डिस्काउंट ऑफर , सभी कारों पर 1 लाख तक की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

मई 2025 में Renault India अपनी कारों पर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। रेनो की Triber Kiger और Kwid पर बंपर छूट मिल रही है। इन तीनों के MY2024 के स्टॉक पर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। वहीं इनके MY2025 के मॉडल पर 50 से 55 हजार रुपये तक की छूट दी जा रही है।

नई दिल्ली। मई 2025 में Renault Triber, Kiger और Kwid पर बंपर डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। यह छूट MY2024 के स्टॉक पर मिल रहा है। इस स्टॉक को खत्म करने के लिए कई डीलरशिप Renault की इन गाड़ियों पर छूट दे रही है। इसके साथ ही मई 2025 में Renault India के MY2025 मॉडल पर भी डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Renault Triber, Kiger और Kwid पर मई 2025 में कितना डिस्काउंट मिल रहा है?

Renault Triber

मई 2025 में 7-सीटर Renault Triber के MY2024 मॉडल पर करीब 1 लाख रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। इसमें 50,000 रुपये की नकद छूट और 40,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस, साथ ही रेफरल और लॉयल्टी स्कीम शामिल है। साथ ही R.E.Li.V.E वाहन स्क्रैपेज स्कीम का लाभ लेने वाले ग्राहकों को एक्सट्रा एक्सचेंज ऑफर भी मिल रहा है। Triber के MY2025 मॉडल पर करीब 50,000 रुपये का डिस्काउंट मिल रहा है। भारतीय बाजार में Renault Triber को 6.15 लाख रुपये से 8.98 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है।

Renault Kwid

मई 2025 में Renault Kwid के MY2024 मॉडल पर 1 लाख रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। इसके MY2025 मॉडल पर करीब 25,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। इस डिस्काउंट ऑफर में कैश डिस्काउंट, एक्सचेंज बोनल और बाकी कई ऑफर मिल रहे हैं। Renault Kwid को भारतीय बाजार में 4.70 लाख रुपये से लेकर 6.45 लाख रुपये तक की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर की जाती है।

Renault Kiger

मई 2025 में Renault Kiger पर भारी डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। इसके MY2024 मॉडल पर बाकी रेनो की गाड़ियों की तरह ही एक लाख रुपये का डिस्काउंट मिल रहा है। इसके MY2025 मॉडलों पर 50,000 रुपये का डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। भारतीय बाजार में Renault Kiger को 6.15 लाख रुपये से 11.23 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच ऑफर किया जाता है।

महिंद्रा बोलेरो का बोल्ड संस्करण पेश, मिलेगा प्रीमियम फीचर्स और ऑल ब्लैक थीम इंटीरियर

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा बोलेरो और Bolero Neo का Bold Edition आने वाला है। कंपनी ने इन दोनों के बोल्ड एडिशन को पेश किया है। जिसमें नया बोल्ड लुक डार्क क्रोम-थीम एक्सटीरियर ऑल ब्लैक प्रीमियम इंटीरियर बोल्ड डिज़ाइन एलिमेंट जो सबसे अलग दिखते हैं और रियर व्यू कैमरा (बोलेरो नियो में) मिलेगा। इसके साथ ही इन दोनों में और भी कई फीचर्स मिलेंगे।

नई दिल्ली। Mahindra Bolero और Bolero Neo Bold Edition को भारतीय बाजार में पेश कर दिया गया है। बोल्ड एडिशन में इनके कॉस्मेटिक में बदलाव किया गया है, ये स्पेशल वेरिएंट हर मॉडल के टॉप वेरिएंट पर बेस्ड हैं और उनका उद्देश्य अपडेटेड एस्थेटिक्स के साथ इनकी अपनी को रिफ्रेश करना है। इनमें किसी तरह का मैकेनिकल बदलाव नहीं किया गया है। आइए जनते हैं कि बोलेरो के बोल्ड एडिशन में क्या कुछ नया दिया गया है?

डिजाइन में बदलाव

Mahindra Bolero और Bolero Neo Bold Edition में डिजाइन में हल्के बदलाव देखने के लिए मिले हैं। इनका सिल्हूट और अनुपात उनके मानक समकक्षों के अनुरूप है। इनमें फ्रंट ग्रिल, फॉग लैंप सराउंड, स्पेयर व्हील कवर और रियर एयर वेंट को डार्क क्रोम डिटेलिंग दी गई है। दोनों ही गाड़ियों में टेलगेट और रियर फेंडर पर 'बोल्ड एडिशन' बैजिंग दी गई है, जो इसे मानक मॉडल से अलग बनाती है।

इंटीरियर अपडेट और फीचर्स

Bolero के बोल्ड एडिशन के इंटीरियर में हल्के बदलाव किए गए हैं। इसके डैशबोर्ड डिजाइन में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। अब दोनों ही गाड़ियों में ऑल-ब्लैक थीम दिया गया है। सीटों को ब्लैक अपहोल्स्ट्री में पेश किया गया है, जिसमें लेदरेट-रैप्ड स्टीयरिंग व्हील है। बोल्ड एडिशन में नए नेक पिलो और सीटबेल्ट कवर भी दिए गए हैं, जो मानक वेरिएंट के थोड़े ज्यादा शानदार दिखाई देते हैं।

इंजन स्पेसिफिकेशन

बोल्ड एडिशन में किसी भी तरह का मैकेनिकल अपडेट नहीं किया गया है। बोलेरो में 1.5-लीटर डीजल मोटर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 74.9bhp की पावर और 210 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

बोलेरो नियो में 1.5-लीटर mHawk डीजल इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 98.5 bhp की पावर और 260 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। यह केवल मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ ही आती है।

कब होंगी लॉन्च?

Mahindra Bolero और Bolero Neo Bold Edition को भारतीय बाजार में पेश कर दिया गया है। इसके पेश होने के बाद मई 2025 के आखिरी तक भारत में लॉन्च होने की उम्मीद है। इनकी कीमत मानक वेरिएंट से 20 हजार रुपये ज्यादा हो सकती है। Mahindra Bolero की एक्स-शोरूम कीमत 9.79 लाख रुपये से लेकर 10.91 लाख रुपये तक और Bolero Neo की एक्स-शोरूम कीमत 9.95 लाख से लेकर 12.15 लाख रुपये के बीच है।

भारत में बनी मारुति फ्रोंक्स का जापान में बजा डंका, क्रैश टेस्ट में मिली 4-स्टार सेफ्टी रेटिंग

मारुति फ्रॉन्क्स जापानी क्रैश टेस्ट मारुति फ्रॉन्क्स का जापान NCAP क्रैश टेस्ट में 4-स्टार सेफ्टी रेटिंग हासिल की है। इस क्रैश टेस्ट में Fronx के लेवल-2 एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) वाले वेरिएंट को लिया गया था। भारतीय बाजार में Fronx को 7.54 लाख रुपये से लेकर 13.04 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। इसमें कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत में बनी Maruti Suzuki Fronx का जापान NCAP में क्रैश टेस्ट किया गया है। इस क्रैश टेस्ट में इसके लेवल-2 एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) और ऑल-व्हील-ड्राइव (AWD) सेटअप समेत कुछ एक्सट्रा फीचर्स वाले मॉडल को शामिल किया गया है। Maruti Suzuki Fronx ने Japan NCAP क्रैश टेस्ट में 4-स्टार रेटिंग हासिल की है।

Japan NCAP कितने पॉइंट हासिल किए?

Maruti Fronx ने फुल-रैप फ्रंटल टक्कर टेस्ट में 50 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से एक बैरियर से सीधे टकराया गया। इस टक्कर में कार को 5 रेटिंग मिली है।

इसके बाद ऑफ़सेट फ्रंटल टक्कर टेस्ट में कार के सामने का आधा हिस्सा 50 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से चलती हुई बाधा से टकराया गया। इसमें बैठे रहने वाले पैसेंजर की सुरक्षा को लेकर 24 में से 21.08 अंक मिले हैं, जिसकी वजह से इसे 5 में से 4 रेटिंग मिली।

ऑफसेट टक्कर टेस्ट में दुर्घटना की स्थिति में कार किसी अन्य वाहन को कितना नुकसान पहुंचा सकती है इसे परखा गया। इस टेस्ट में इसे 5 में से नकारात्मक -2.12 अंक मिले।

साइड इम्पैक्ट टेस्ट में Fronx को 55 किमी प्रति घंटे की स्पीड से चलती हुई बाधा द्वारा साइड से टक्कर मारी गई। इस टेस्ट में फ्रॉन्क्स को लेवल-5 रेटिंग मिली।

रियर-एंड टक्कर टेस्ट में चालक और सह-चालक दोनों की सीटों को व्हिपलैश चोट से रहने वालों की सुरक्षा के लिए 5 में से 4 रेटिंग हासिल की है।

Maruti Fronx का पैदल चल रहे लोगों को लेकर भी टेस्ट किया गया, जिसमें पैदल यात्री सिर की सुरक्षा के लिए लेवल 3/5 और पैदल यात्री पैर की सुरक्षा के लिए पूर्ण लेवल 5 अंक हासिल किए।

ऑटोनॉमस इमरजेंसी ब्रेकिंग टेस्ट में इसे 5 रेटिंग हासिल की है। इसमें चलती हुई पैदल चलने वाली डमी के खिलाफ़ टकराव की रोकथाम के लिए परीक्षण किया गया था। इसने लेन डिपार्चर प्रिवेंशन सिस्टम में सभी अंक हासिल किए।

ऑटोनॉमस इमरजेंसी ब्रेकिंग सिस्टम (इंटरसेक्शन) टेस्ट में इसे केवल लेवल 3 रेटिंग मिली है और हाई-परफॉरमेंस हेडलाइट्स टेस्ट और पेडल मिसएप्लीकेशन प्रिवेंशन टेस्ट के लिए लेवल 4 स्कोर ही मिला है।

Maruti Fronx के फीचर्स

जापान-स्पेक मारुति फ्रॉन्क्स में लेवल-2 ADAS मिलता है, जिसमें एयरबैग, एक इलेक्ट्रॉनिक स्थिरता कार्यक्रम (ESP), एक हिल-होल्ड असिस्ट, एक 360-डिग्री कैमरा और ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज जैसे सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

Maruti Fronx की कीमत

Maruti Suzuki Fronx को भारतीय बाजार में 7.54 लाख रुपये से 13.04 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है। भारत में इसका मुकाबला Tata Nexon, Hyundai Venue, Kia Sonet, Skoda Kylaq और Kia Syros से देखने के लिए मिलता है।

बजाज प्लैटिना 110 का नया वेरिएंट एनएक्सटी लॉन्च, बेस वर्जन से कितनी है अलग?

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में Bajaj Platina 110 NXT वेरिएंट भारतीय बाजार में लॉन्च हुई है। इसका डिजाइन पहले की तरह है लेकिन इसे बेस वेरिएंट से अलग दिखाने के लिए कुछ बदलाव किए गए हैं जिसमें कलर स्कीम से लेकर ग्राफिक्स तक शामिल है। इतना ही नहीं इसमें कुछ नए फीचर्स भी दिए गए हैं जिसकी वजह से इसे बेस वेरिएंट के ऊपर रखा गया है।

नई दिल्ली। बजाज ऑटो ने भारतीय बाजार में Platina 110 का नया वेरिएंट Platina 110 NXT को लॉन्च कर दिया है। इसे नए कलर स्कीम, ग्राफिक्स और इंजन अपडेट के साथ लॉन्च किया गया है। वहीं, इसे बेस वेरिएंट के एकदम ऊपर ही रखा गया है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों वेरिएंट में कितना अंतर है, इसके बारे में बता रहे हैं। आइए इनके बारे में विस्तार से जानते हैं।

कीमत

Bajaj Platina 110 NXT को भारत में 74,214 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है, जो बेस वेरिएंट Platina 110 से 2,656 रुपये ज्यादा है, जिसकी कीमत 71,558 रुपये है।

डिजाइन और कलर स्कीम

दोनों ही वेरिएंट का डिजाइन एक जैसा ही है, लेकिन नए वेरिएंट को अलग और ज्यादा स्टाइलिश दिखाने के लिए कुछ चीजों में बदलाव किया गया है। प्लेटिना 110 NXT में हेडलाइट के चारों ओर क्रोम बेजल, बॉडी पैनल और हेडलाइट काउल पर नए ग्राफिक्स दिए गए हैं। इस वेरिएंट में थोड़े स्पोर्टी लुक के लिए रिम डिकल्स के साथ ब्लैक ऑउट अलॉय व्हील भी दिए गए हैं। इसे रेड-ब्लैक, सिल्वर-ब्लैक और येलो-ब्लैक कलर स्कीम के साथ लेकर आया गया है।

बेस वेरिएंट की बात करें, तो इसमें ब्लैक कलर के अलॉय मिलते हैं, जिसमें अलग-अलग रिम स्टिकर दिए गए हैं। बेस वेरिएंट में राइडर की सेफ्टी के लिए नकल गार्ड भी मिलते हैं। बेस वेरिएंट को एबोनी ब्लैक ब्लू, एबोनी ब्लैक रेड कलर में ऑफर किया जाता है।

इंजन

Bajaj Platina 110 NXT में अपडेटेड इंजन मिलता है, जो अब नवीनतम उत्सर्जन मानदंडों को पूरा करने के लिए OBD-2B अनुरूप है। नए वेरिएंट में इलेक्ट्रॉनिक कार्बोरेटर को अब FI (फ्यूल इंजेक्शन) सिस्टम से बदल दिया गया है। यह अपडेट जल्द ही बेस वेरिएंट में भी दिया जा सकता है।

दोनों वेरिएंट में एक ही 115.45cc, एयर-कूल्ड, सिंगल सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 8.5PS की पावर और 9.81Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 4-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है।

फीचर्स

नई Platina 110 NXT में एनालॉग स्पीडोमीटर और एनालॉग फ्यूल गेज के साथ-साथ टेल-टेल लाइट्स के साथ इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है, यह फीचर्स बेस वेरिएंट में भी मिलता है। नए वेरिएंट में कंसोल के ठीक ऊपर एक USB चार्जिंग पोर्ट दिया गया है। दोनों वेरिएंट में एक ही हैलोजन हेडलाइट (एलईडी डीआरएल के साथ), टेल लाइट और इंडिकेटर्स मिलते हैं। बेस वेरिएंट की तुलना में NXT वेरिएंट में ज्यादा आरामदायक कुशनिंग सीट दी गई है।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग सिस्टम

दोनों ही वेरिएंट में 17-इंच ब्लैक-आउट अलॉय व्हील्स, टेलिस्कोपिक फोर्क और गैस-चार्ज्ड 5-स्टेप प्रीलोड-एडजस्टेबल ट्विन रियर शॉक एब्जॉर्बर के साथ एक ही अंडरपिनिंग्स दिया गया है। दोनों में ही CBS (कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम) के साथ 130mm फ्रंट और 110mm रियर ड्रम ब्रेक दिया गया है।

जगुआर की ई.वी कॉन्सेप्ट कार भारत में एंट्री के लिए तैयार, 14 जून को होगी पेश

परिवहन विशेष न्यूज

जगुआर टाइप 00 अवधारणा कार को भारत में पेश करने की तैयारी तेज हो गई है। इसे 14 जून 2025 को भारत के मुंबई में पेश किया जाएगा। इसे ग्लोबल लेवल पर सबसे पहले दिसंबर 2024 में मियामी में पेश किया गया था। इसमें मिलने वाली बैटरी 15 मिनट की चार्जिंग में 321 किलोमीटर तक का रेंज देगी। इसका इंटीरियर काफी फ्यूचरिस्टिक है।

नई दिल्ली। जगुआर टाइप 00 ईवी कॉन्सेप्ट को दिसंबर 2024 में ग्लोबल लेवल पर पेश किया गया था। यह अपने डिजाइन के कारण पूरी दुनिया में काफी सुर्खियां बटोरी चुकी है। अब कंपनी इसे भारत में 14 जून को पेश करने वाली है। इसे सबसे पहले मियामी में पेश किया गया था, उसके बाद पेरिस, मोनाको, म्यूनिख और टोक्यो में पेश किया जा चुका है अब इसे भारत के मुंबई में पेश किया जाएगा। आइए जानते हैं कि Jaguar Type 00 concept को किन खूबियों के साथ आने वाली है?

कैसा है डिजाइन?

Jaguar Type 00 concept का डिजाइन काफी बोल्ड है। इसमें एक लंबा बोनट और पीछे की तरफ केबिन दिया गया है। इसमें कूप-स्टाइउल रूफलाइन दी गई है। इसके सामने की तरफ संलग्न ग्रिल और बोनट पर नीचे की तरफ एक पतली लाइटिंग दी गई है। इसके ग्रिल का लुक बॉक्सी है, जो जगुआर के नए डिजाइन को दिखाता है। इसके बंपर के नीचे की तरफ एयर वेंट दिया गया है।

साइड प्रोफाइल की बात करें तो, आगे और पीछे की तरफ प्लेयर्ड फेंडर दिए गए हैं। फ्रंट फेंडर को ऐसे डिजाइन किया गया है, जिससे साइड-व्यू कैमरा नहीं दिखाई देता है। पहियों में एक नया डबल जे राउंडेल दिया गया है, जो ग्रोल लोगों की जगह लेता है।

Type 00 concept के रूफ पर साइनिंग बॉडी-कलर पैनल दिया गया है, जो केबिन में लाइट को फिल्टर करने देता है। पीछे की तरफ रियर विंडशील्ड की जगह पर पैंटोग्राफ पैनल दिया गया है। रियर बंपर में डिफ्यूजर और पीछे की तरफ ग्रिल जैसे पैनल दिए गए हैं, जो टेल लाइट्स को एकीकृत करता है।

फ्यूचरिस्टिक इंटीरियर

Jaguar Type 00 concept में दो फोल्डेबल डिस्प्ले दिया गया है, जिसमें एक ड्राइवर के लिए, तो दूसरा सामने बैठने वाले पैसेंजर के लिए है। इसमें जो सेंटर कंसोल दिया गया है, उसमें टोटेम रखने से यूजर को केबिन के मूड को समायोजित कर सकते हैं, जिसमें स्क्रीन डिस्प्ले, लाइटिंग शामिल है।

ड्राइविंग रेंज

कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक, Jaguar Type 00 concept सिंगल चार्ज में 770 किमी तक की रेंज और 15 मिनट की चार्जिंग में 321 किमी तक की ड्राइविंग रेंज मिलेगी।

कब होगी लॉन्च?

Jaguar Type 00 concept को भारतीय बाजार में साल 2026 के आखिरी या 2027 के शुरुआत में लॉन्च किया जा सकता है। इसे दुनियाभर में चरणबद्ध तरीके से लॉन्च किया जाएगा। पहले चरण में UK और US जैसे देश शामिल होंगे। भारत में इसे दूसरे चरण में लॉन्च किया जाएगा।

भारतीय सिविल सेवा - भारतीय प्रशासन का एक स्टील फ्रेम

विजय गर्ग

भारतीय सिविल सेवा उत्पत्ति और इतिहास ब्रिटिश राज के दौरान इंपीरियल सिविल सर्विस नामक भारतीय सिविल सेवा को पहली बार लॉर्ड कार्नवालिस (भारत के गवर्नर-जनरल, 1786-93) द्वारा भारत में अस्तित्व में लाया गया था और पहले ने अपने कार्यकाल के दौरान सिविल सेवाओं का आयोजन किया था। 1800 में, फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना लॉर्ड वेलेस्ली ने नई भर्तियों के प्रशिक्षण के लिए की थी और बाद में 1806 में, ईस्ट इंडिया कॉलेज की स्थापना रंगरूटों को दो साल का प्रशिक्षण देने के लिए इंग्लैंड के हैली बरी में की गई थी। इसके अलावा, भर्ती के लिए एक खुली प्रतियोगिता 1853 के चार्टर अधिनियम के साथ शुरू की गई थी।

भारत की सिविल सेवा (या किसी भी राष्ट्र के उस मामले के लिए), देश की प्रशासनिक प्रणाली की रीढ़ है, क्योंकि इसमें सरकारी अधिकारी शामिल हैं जो नागरिक व्यवसायों में कार्यरत हैं जो न तो राजनीतिक हैं और न ही न्यायिक। सिविल सेवकों की जिम्मेदारी भारत के प्रशासन को प्रभावी और कुशलता से चलाने और प्रबंधित करने की है। भारत जैसे विशाल और विविध देश के प्रशासन को अपने प्राकृतिक, आर्थिक और मानव संसाधनों के कुशल प्रबंधन की आवश्यकता है। भारत के संसदीय लोकतंत्र की व्यवस्था में प्रशासन चलाने की अंतिम जिम्मेदारी जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की है लेकिन यह मुट्ठी भर प्रतिनिधि यानी मंत्रियों से आधुनिक प्रशासन की कई समस्याओं से निपटने और संभालने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। इस प्रकार मंत्री नीति निर्धारित करते हैं और यह सिविल सेवकों के लिए इस नीति को प्रभावी ढंग से लागू करना और पूरा करना है। यही कारण है कि भारतीय सिविल सेवा को 'सरकार का प्रशासनिक अंग' के रूप में भी जाना जाता है।

भारतीय सिविल सेवा उत्पत्ति और इतिहास ब्रिटिश राज के दौरान इंपीरियल सिविल सर्विस नामक भारतीय सिविल सेवा को पहली बार लॉर्ड कार्नवालिस (भारत के गवर्नर-जनरल, 1786-93) द्वारा भारत में अस्तित्व में लाया गया था और पहले ने अपने कार्यकाल के दौरान सिविल सेवाओं का आयोजन किया था। 1800 में, फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना लॉर्ड वेलेस्ली ने नई भर्तियों के प्रशिक्षण के लिए की थी और बाद में 1806 में, ईस्ट इंडिया कॉलेज की स्थापना रंगरूटों को दो साल का प्रशिक्षण देने के लिए इंग्लैंड के हैली बरी में की गई थी। इसके अलावा, भर्ती के लिए एक खुली प्रतियोगिता 1853 के चार्टर अधिनियम के साथ शुरू की गई थी।

यद्यपि 1853 के चार्टर अधिनियम ने सैद्धांतिक रूप से भारतीयों को सिविल सेवाओं को खोल दिया, लेकिन भारतीयों को शुरू से ही उच्च पदों से रोक दिया गया था। ब्रिटिश राज के दौरान, भारतीयों को ज्यादातर कानून और नीति-निर्माण निकायों से बाहर रखा गया था। इसके अलावा, भर्ती परीक्षा भी केवल इंग्लैंड में आयोजित की जाती थी और वह भी केवल अंग्रेजी में और विषयों में ग्रीक और लैटिन भाषाएं शामिल थीं, जिन्होंने भारतीयों के लिए चीजों को बदतर बना दिया। हालांकि, 1863 में सत्येंद्र नाथ टैगोर के ऐसा करने वाले पहले भारतीय बनने के बाद से ही भारतीयों ने इसे भारतीय सिविल सेवा के प्रतिष्ठित रैंकों में बनाना शुरू कर दिया था, लेकिन सिविल सेवा में प्रवेश करना अभी भी भारतीयों के लिए एक बेहद मुश्किल काम था।

यद्यपि 1935 के भारत सरकार अधिनियम ने अपने क्षेत्रों के तहत एक संघीय लोक सेवा आयोग और प्रांतीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की सिफारिश की, लेकिन फिर भी अंग्रेजों द्वारा अगस्त 1947 में भारत से बाहर किए जाने तक नियंत्रण और अधिकार की स्थिति ब्रिटिश हाथों में रही।

एक सिविल सेवक की परिभाषा एक सिविल सेवक कोई भी व्यक्ति होता है जो संघ या राज्य सरकार द्वारा संघ या राज्य के मामलों के संबंध में किसी भी सिविल सेवा या पद पर नियुक्त भारत का नागरिक होता है और इसमें रक्षा सेवा में एक नागरिक भी शामिल होता है। सिविल सेवा के सदस्य भारत के राष्ट्रपति की खुशी में सेवा करते हैं और हमारे संविधान के अनुच्छेद 311 द्वारा राजनीति से प्रेरित हितों या प्रतिशोध की कार्रवाई से अच्छी तरह से परिरक्षित हैं। सिविल सेवक भारत सरकार के कर्मचारी हैं; हालाँकि, सरकार के सभी कर्मचारी सिविल सेवक नहीं हैं।

सिविल सेवकों में शामिल हैं:

केंद्र सरकार और राज्य सरकार में प्रशासक विदेशी मिशनों / दूतावासों में उत्सर्जन कर संग्राहक और राजस्व आयुक्त सिविल सेवा ने पुलिस अधिकारियों को कमीशन दिया संयुक्त राष्ट्र और उसकी एजेंसियों में स्थायी प्रतिनिधि और कर्मचारी अध्यक्ष प्रबंध निदेशक विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, निगमों, बैंकों और वित्तीय संस्थानों के प्रबंधन बोर्ड के सदस्य भारत सरकार और उससे ऊपर के संयुक्त सचिव के पद पर सभी नियुक्तियां, और अन्य प्रमुख नियुक्तियां मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति द्वारा की जाती हैं। हालांकि, संयुक्त सचिव से नीचे रैंक में सभी नियुक्तियां सिविल सेवा बोर्ड द्वारा की जाती हैं।

सिविल सेवा के प्रमुख

सर्वोच्च रैंकिंग वाला सिविल सेवक भारतीय गणराज्य के कैबिनेट सचिवालय का प्रमुख होता है जो कैबिनेट सचिव भी होता है। वह सिविल सेवा बोर्ड के पदेन अध्यक्ष हैं; भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रमुख और सरकार के अधीन अन्य सभी सिविल सेवाओं के प्रमुख भी। वह भारत के आदेश के क्रम में 11 वां स्थान भी रखते हैं।

भारतीय सिविल सेवा परीक्षा भारतीय सिविल सेवा परीक्षा को आमतौर पर यूपीएससी परीक्षा के रूप में जाना जाता है। आईसीएस परीक्षा को कभी-कभी आईएएस परीक्षा के रूप में जाना जाता है जो विशेष रूप से भारतीय प्रशासनिक सेवा या आईएएस के रूप में जानी जाने वाली भारतीय सिविल सेवा की शाखाओं में से एक के लिए आयोजित की जाती है। सिविल सेवकों को न केवल खुली प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से भर्ती किया जाता है, बल्कि राज्य सरकारों के कुछ अधिकारियों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इस परीक्षा का उपयोग सरकारी कार्यालय के विभिन्न विभागों में उपलब्ध विभिन्न आधिकारिक पदों के लिए उम्मीदवारों की भर्ती और प्रशिक्षण के लिए किया जाता है।

विस्तृत जानकारी के लिए लिंक पर क्लिक करें - भारतीय सिविल सेवा परीक्षा

भर्ती और प्रशिक्षण भारतीय सिविल सेवा के लिए भर्ती परीक्षा, निश्चित रूप से, दुनिया भर में कठोर परीक्षाओं में से एक है। समाज में बदलते रुझान, साथ ही अर्थव्यवस्था, तकनीकी ज्ञान और मानवाधिकारों जैसे क्षेत्रों पर अधिक तनाव को अनिवार्य बनाती है। परीक्षा में प्रबंधकीय कौशल के परीक्षण पर भी बहुत कम तनाव है। हमारी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन विभिन्न नौकरियों में विशेषज्ञों की आवश्यकता भी पैदा करते हैं। तेजी से आगे बढ़ने वाली तकनीक और हर क्षेत्र में विशेषज्ञता की उच्च डिग्री के साथ, देश अब विशेष कौशल की आवश्यकता वाले पदों में सामान्यवादियों को रखने का जोखिम नहीं उठा सकता है। सार्वजनिक सेवा से निजी क्षेत्र में सिविल सेवकों का प्रवेश और निकास और इसके विपरीत सिविल सेवाओं की नौकरियों को अधिक आकर्षक बना देगा, इस प्रकार यह एक नई अर्थव्यवस्था की नौकरी बना देगा। सूचना प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम

इसलिए, अधिक उपयुक्त उम्मीदवारों को लाने के लिए, यूपीएससी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सेवाओं की प्रवेश स्तर की परीक्षाओं में परिवर्तन वर्ष 2011 में यूपीएससी द्वारा प्रारंभिक चरण परीक्षाओं में शुरू किए गए थे। यूपीएससी 2014 तक मेन्स स्टेज परीक्षा के लिए परीक्षा पैटर्न बदलने पर भी विचार कर रहा है।

अखिल भारतीय सिविल सेवा का पूरा विचार तब खो जाता है जब अन्य राज्य अधिकारियों को नागरिक सेवाओं में पदोन्नत किया जाता है और राज्य में ही काम किया जाता है। यह वास्तव में एक प्रतिगामी कदम है। अखिल भारतीय सिविल सेवा बनाने के विचार को बनाए रखने के लिए अन्य राज्यों में सेवा करने के लिए सिविल सेवा में पदोन्नत होने वाले अधिकारियों के लिए इसे अनिवार्य किया जाना चाहिए। उभरती मांगों और समाज और अर्थव्यवस्था में बदलाव से निपटने के लिए सिविल सेवा / नौकरों की प्रकृति में एक प्रतिमान बदलाव की आवश्यकता होती है।

सिविल सेवा भर्ती के लिए पेश किया गया प्रशिक्षण सबसे व्यापक प्रशिक्षण प्रणालियों में से एक है। वे अंतराल जहां प्रशिक्षण सुविधाएं नए रुझानों के अनुरूप नहीं हैं, उन्हें समय-समय पर पहचान करनी होगी ताकि प्रशिक्षण को प्रेरण स्तर पर सही प्रदान किया जा सके।

राज्य सिविल सेवा (एससीएस / पीसीएस) राज्य सिविल सेवा (जिसे प्रांतीय सिविल सेवा के रूप में भी जाना जाता है) परीक्षाएं भारत के व्यक्तिगत राज्यों द्वारा आयोजित की जाती हैं। राज्य सिविल सेवा के अधिकारियों को राज्य लोक सेवा आयोगों के माध्यम से विभिन्न राज्यों द्वारा भर्ती किया जाता है।

राज्य सिविल सेवा (एससीएस) परीक्षा के तहत सेवाओं की श्रेणियां इस प्रकार हैं:

राज्य सिविल सेवा, कार्यकारी शाखा कक्षा- II (SCS) राज्य पुलिस सेवा, कक्षा- II (एसपीएस) राज्य वन सेवा, कक्षा- II (SFS) खंड विकास अधिकारी तहसीलदार / तालुकदार / सहायक कलेक्टर आबकारी एवं कराधान अधिकारी जिला रोजगार अधिकारी जिला ट्रेजरी अधिकारी जिला कल्याण अधिकारी सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियाँ जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक / अधिकारी संबंधित राज्य द्वारा नियमों के अनुसार अधिसूचित कोई अन्य कक्षा- I / कक्षा- II सेवा व्याख्याता, सहायक / एसोसिएट प्रोफेसर, सरकारी डिग्री कॉलेजों के प्रिंसिपल, कक्षा I, आदि। ऑनलाइन शिक्षा विस्तृत जानकारी के लिए लिंक पर क्लिक करें - एसएससी परीक्षा

संगठन और वर्गीकरण भारत की सिविल सेवाओं को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

अखिल भारतीय सेवाएं

केंद्रीय सिविल सेवा

अखिल भारतीय सेवाओं में शामिल हैं:

भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) भारतीय वन सेवा (IFS) भारतीय पुलिस सेवा (IPS)

केंद्रीय सिविल सेवा में शामिल हैं:

समूह ए ग्रुप बी

अखिल भारतीय सिविल सेवा के लिए सभी नियुक्तियां भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती हैं।

संविधान में नई अखिल भारतीय सेवाओं या केंद्रीय सेवाओं की स्थापना के लिए दो-तिहाई बहुमत से हल करने के लिए राज्यसभा (भारत की संसद के ऊपरी सदन) को शक्ति देकर अधिक सिविल सेवा शाखाओं को स्थापित करने का प्रावधान है। भारतीय वन सेवा और भारतीय विदेश सेवा इस संवैधानिक प्रावधान के तहत स्थापित दो सेवाएं हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी पर सटीक तारीख जीवन की भविष्यवाणी की

विजय गर्ग

टोहो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा एक सुपर कंप्यूटर सिमुलेशन, नासा ग्रह मॉडलिंग का उपयोग करते हुए, भविष्यवाणी करता है कि पृथ्वी की ऑक्सीजन लगभग एक अरब वर्षों में गायब हो जाएगी, जिससे अस्तित्व असंभव हो जाएगा। अध्ययन ने पृथ्वी के वायुमंडल के संभावित विकास का पता लगाया, जो 400,000 सिमुलेशन चला रहा था।

सूर्य के युग के रूप में, यह पृथ्वी की जलवायु को प्रभावित करते हुए, गर्म और उज्जवल हो जाएगा। पानी वाष्पित हो जाएगा, सतह का तापमान बढ़ जाएगा, और कार्बन चक्र कमजोर हो जाएगा, पौधों को मार देगा और ऑक्सीजन उत्पादन को रोक देगा। वायुमंडल उच्च मीथेन की स्थिति में वापस आ जाएगा, महान ऑक्सीकरण घटना से पहले प्रारंभिक पृथ्वी की याद दिलाता है।

नेचर जियोसाइंस में प्रकाशित इस अध्ययन में 'पृथ्वी के ऑक्सीजन युक्त वातावरण का भविष्य जीवन काल' शीर्षक से पृथ्वी के ऑक्सीजन युक्त वातावरण का भावी

जीवनकाल 1 बिलियन वर्ष पाया गया है।

जापान के टोक्यो में टोहो विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर काज़ुमी ओजाकी ने एक समाचार विज्ञप्ति में कहा, ₹कई वर्षों से, पृथ्वी के जीवमंडल के जीवनकाल पर सूर्य और वैश्विक कार्बोनेट-सिलिकेट भू-रासायनिक चक्र के स्थिर चमक के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर चर्चा की गई है।

इस तरह के सैद्धांतिक ढांचे के कोरोलरी में से एक वायुमंडलीय CO2 के स्तर में निरंतर गिरावट और भूवैज्ञानिक समय पर ग्लोबल वार्मिंग है।

यह आम तौर पर सोचा जाता है कि प्रकाश संश्लेषण के लिए ओवरहीटिंग और CO2 की कमी के संयोजन के कारण पृथ्वी का जीवमंडल 2 बिलियन वर्षों में समाप्त हो जाएगा।

अगर सच है, तो कोई उम्मीद कर सकता है कि वायुमंडलीय O2 का स्तर भी अंततः दूर के भविष्य में कम हो जाएगा। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि यह कब और कैसे होगा।

जबकि जीवन सैद्धांतिक रूप से ऐसे वातावरण में मौजूद हो सकता है, यह बहुत अलग होगा जो हम जानते हैं। काजुमी ओजाकी ने कहा कि पिछले अनुमानों से पता चला है कि ओवरहीटिंग और सीओ 2 की कमी के कारण पृथ्वी का बायोस्फीयर दो अरब वर्षों में समाप्त हो जाएगा। यह नया शोध उस समय सीमा को बताता है, जो एक अरब वर्षों में तेजी से डीऑक्सीजनेशन की भविष्यवाणी करता है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

घटती हरियाली, बढ़ते खतरे

विजय गर्ग

हाल ही में तेलंगाना के कांचा गाचीबोवली क्षेत्र में लगभग चार सौ एकड़ में फैले जंगल की कटाई ने पूरे देश का ध्यान अपनी और आकर्षित किया। इस संवेदनशील मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय ने स्वतः संज्ञान लिया। न्यायमूर्ति बीआर गवईं और न्यायमूर्ति आगस्टिन जार्ज मसीह की पीठ ने इस मामले में तीखी टिप्पणी करते हुए राज्य सरकार से कई कड़े सवाल पूछे और अगली सुनवाई तक क्षेत्र में किसी भी प्रकार की गतिविधि पर प्रतिबंध लगा दिया। अदालत ने स्पष्ट पूछा कि आखिरकार ऐसी कौन-सी आपात स्थिति पैदा हो गई थी, जिसके कारण इतनी जल्दबाजी में जंगल शुरू करनी पड़ी? क्या इस परियोजना के लिए पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन (ईआइए) प्रमाणपत्र लिया गया था और क्या वनों की कटाई लिए वन विभाग से विधिवत अनुमति ली गई थी ? मामला तब प्रकाश में आया, जब तेलंगाना उच्च न्यायालय यालय के पंजीयक ने इस कटाई से संबंधित कुछ तस्वीरें सुप्रीम कोर्ट को भेजीं, जिनमें साफ तौर पर भारी मशीनों के जरिए पेड़ों की कटाई और जमीन समतल करने की गतिविधियां देखी गईं। उन तस्वीरों से यह भी स्पष्ट हुआ कि इस कार्य को रात में अंजाम दिया जा रहा था। यह स्थान हैदराबाद विश्वविद्यालय पास है, जहां तेलंगाना सरकार एक भव्य आइटी पार्क के निर्माण योजना बना रही थी, लेकिन यही इलाका कई प्रकार के वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास भी है, जिनमें मोर, हिरण और अन्य संरक्षित प्रजातियां शामिल हैं। सोशल मीडिया पर एक हृदयविदारक वीडियो सुर्खियों में आया, जिसमें अंधकार बुलडोजर चलते हुए और आसपास मोरों की भयभीत आवाजें सुनाई दे रही थीं। इसने आम जनमानस की अंतरात्मा को झकझोर दिया। वीडियो से स्पष्ट हो रहा था कि केवल पेड़ों की ही नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र की निर्ममता से हत्या की जा रही है। यह जंगल मात्र हरे-भरे पेड़ों का समूह नहीं बल्कि हजारों जीवों का आश्रय था।

एक मंदिर प्रबंधन द्वारा अवैध रूप से पेड़ों की बेतहाशा कटाई को लेकर एक अन्य मामले में भी सुप्रीम कोर्ट ने पिछले दिनों सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि कोई भी इस तरह पेड़ों को काटने की अनुमति नहीं देता। यह न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से गलत है, बल्कि धार्मिक दृष्टि से भी अस्वीकार्य है। उस मामले में भी 16194 सुप्रीम कोर्ट ने । पूछा था कि पेड़ों को काटने की इतनी मजबूरी क्यों है और क्या राज्य ने पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन प्रमाणपत्र प्राप्त किया है? इससे कुछ ही दिन पहले आगरा में ताजमहल के आसपास अवैध रूप से काटे गए सैकड़ों वृक्षों को लेकर भी शीर्ष न्यायालय ने कड़ा रुख अपनाते हुए प्रत्येक पेड़ के लिए एक लाख रुपए का जुर्माना लगाते । हुए कठोर टिप्पणी की थी। अदालत का कहना था कि बड़ी संख्या पेड़ों को काटना किसी इंसान की हत्या से भी बदतर है, इसलिए पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वालों पर कोई दया नहीं दिखाई जानी चाहिए। शीर्ष अदालत ने उस मामले में केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (सीईसी) की रपट को स्वीकार करते हुए कहा था कि मथुरा-वृंदावन के डालमिया फार्म में 454 पेड़ काटे गए, जो गंभीर पर्यावरणीय अपराध है। समिति ने इस कृत्य के लिए प्रति पेड़ एक लाख रुपए का जुर्माना (कुल 4.54 करोड़ रुपए) लगाने की सिफारिश की थी।

बड़े स्तर पर अवैध रूप से पेड़ों की कटाई पर देश की सर्वोच्च अदालत की ये टिप्पणियां देशभर में पेड़ों के संरक्षण और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को सामने रखती हैं। सर्वोच्च न्यायालय की पहल से उम्मीद जगी है कि ऐसे विनाशकारी प्रयासों पर कड़ी रोक लगेगी और विकास के नाम पर प्रकृति की बलि देने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा। अदालत ने अपने इन निर्णयों से स्पष्ट संदेश दिया है कि पेड़ों की कटाई को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। अदालत के ये निर्णय देश के उन क्षेत्रों के लिए भी संदेश है, जहां पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। पेड़ों की कटाई के ही कारण दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति गंभीर हो गई है।

मानव जीवन पेड़ों पर ही निर्भर है क्योंकि इन्हीं से हमें आक्सीजन मिलती है। वायुमंडल में मौजूद आक्सीजन को प्राणवायु माना जाता है। पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक हमें अपने आसपास इतने वृक्ष अवश्य लगाने चाहिए ताकि कम से कम अपने परिवार के लिए तो हम आक्सीजन की पूर्ति स्वयं ही कर सकें। एक व्यक्ति को दिनभर में काफी मात्रा में आक्सीजन की आवश्यकता होती है, इसीलिए पर्यावरणविदों का कहना है कि वृक्षारोपण कर स्वयं के लिए आक्सीजन पैदा करना जरूरी है अन्यथा जिस प्रकार आज हम पानी की बोतल खरीद कर पानी पीते हैं, उसी प्रकार हमारी आने वाली पीढ़ी को आने वाले समय में शुद्ध हवा की बोतलें खरीदने पर विवश पड़ेगा। वायुमंडल में यदि आक्सीजन नहीं होगी, तो पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जाएगा, इसलिए ज्यादा से ज्यादा पौधरोपण पर जोर देना समय की बड़ी मांग है।₹

एक रपट के मुताबिक एक स्वस्थ वृक्ष प्रतिदिन इतना आक्सीजन छोड़ता है, जिससे छह-सात लोगों को प्राणवायु मिल जाती है, लेकिन पर्याप्त वृक्षों के अभाव में कई स्थानों पर अब एक ही वृक्ष को करीब 20 लोगों को आक्सीजन देनी पड़ रही है। दरअसल, वायुमंडल में पहले आक्सीजन की जितनी मात्रा होती थी, वृक्षों के अभाव में उसमें दस फीसद तक की कमी आ चुकी है। परिणामस्वरूप फेफड़ों को पर्याप्त आक्सीजन नहीं मिल पाने के कारण दमा और हृदय रोग के साथ संक्रमण की समस्या पैदा होने लगी हैं। नीम, बरगद और पीपल जैसे बड़े छायादार वृक्ष, जो 50 साल या उससे ज्यादा पुराने हों, उनसे तो प्रतिदिन 140 किलो तक आक्सीजन मिलती है। पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार करीब दो सौ वर्ष पुराने पीपल, नीम, बरगद इत्यादि के पेड़ प्रतिदिन पर्याप्त आक्सीजन का स्राव करते हैं। ऐसे में यह अनुमान लगाना कठिन नहीं कि ऐसे छायादार पुराने वृक्ष काटने से पर्यावरण को कितनी भारी क्षति पहुंचती है।

यही वजह कि ऐसे छायादार वृक्ष अपने आसपास के परिवेश में लगाने की प्राचीन भारतीय परंपरा रही है। नीम, बरगद और तुलसी इत्यादि प्रतिदिन 20 घंटे से भी ज्यादा समय तक आक्सीजन छोड़ते हैं, जबकि पीपल तो दिन में 22 घंटे भी ज्यादा समय तक आक्सीजन का स्राव करता है। बांस के पेड़ किसी भी अन्य वृक्ष के मुकाबले 30 फीसद ज्यादा आक्सीजन पैदा करते हैं।

एक स्वस्थ वृक्ष से मिलने वाली आक्सीजन की कीमत के आधार पर से वृक्ष की सालाना कीमत कई लाख रुपए होती है। स्वच्छ वायु के अभाव

में लोग बीमारियों के जाल में फंस रहे हैं, उनकी प्रजनन क्षमता पर असर पड़ रहा है। कार्यक्षमता भी प्रभावित हो रही है कैंसर, हृदय रोग, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों का संक्रमण, निमोनिया और लकवा के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। लोगों की कमाई का बड़ा हिस्सा इलाज पर ही खर्च हो जाता है। बहरहाल, तेजी से होते जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की विकराल होती स्थिति को देखते हुए अब यह समझने की जरूरत है कि हमारे वायुमंडल में जो आक्सीजन मौजूद है, उसमें सबसे बड़ा योगदान पेड़-पौधों का ही है। इसलिए इन्हें बचाना होगा।

कहानी: ख्वाहिश

विजय गर्ग

अशोक ने जैसे ही शोभा के मरने की खबर फोन पर बताई, मैं ठगी सी रह गई. मैं पति सुनील के साथ जयपुर के लिए निकल ली. रास्ते भर उस के साथ बिताए पल याद आने लगे. शोभा तो मर गई, पर मरने से पहले उस की ख्वाहिश पूरी हो सकी? उस के मन पर 'बांझ' होने का ठप्पा क्या हट पाया

ट्रिंग ट्रिंग फोन की घंटी बज रही थी. घड़ी में देखा, तो रात के साढ़े १२ बजे थे. इतनी रात में किस का फोन हो सकता है. किसी बुरी आशंका से मन कांप उठा. रिसीवर उठाया तो दूसरी ओर से अशोक की भर्राई हुई आवाज थी, "दीदी शोभा शांत हो गई. वह हम सब को छोड़ कर दिव्यलोक को चली गई."

कुछ पल को मैं ठगी सी बैठी रही. फोन की आवाज से मेरे पति सुनील भी जाग गए थे. मैं ने उन्हें स्थिति से अवगत कराया. हम ने आपस में सलाह की और फिर मैं ने अशोक को फोन मिलाया, "अशोक, हम जल्दी ही सुबह जयपुर पहुंच जाएंगे, हमारा इंतजार करना."

सुबह 5 बजे हम दोनों अपनी गाड़ी से जयपुर के लिए रवाना हो गए. दिल्ली से जयपुर पहुंचने में 5 घंटे लगते हैं. वैसे भी सुबहसुबह सड़कें खाली थीं. अतः 4 घंटे में ही पहुंच जाने की आशा थी. रास्तेभर शोभा का खयाल आता रहा.

अतीत की यादें चलचित्र की भांति आंखों के आगे घूमने लगीं.

शोभा मेरे छोटे भाई अशोक की पत्नी थी. वह बहुत मृदुभाषी, कार्यकुशल और खुशमिजाज की थी. याद हो आया वह दिन, जब विवाह के बाद वरवधू का स्वागत करने के लिए मां ने पूजा का थाल मेरे हाथ में पकड़ा दिया. वैसे, बड़ी भाभी का हक बनता था वरवधू को गृहप्रवेश करवाने का. किंतु बड़ी भाभी की तबियत ठीक नहीं थी, वह पेट से थीं और डाक्टर ने उन्हें बेडरेस्ट के लिए कहा हुआ था. अतः आरती का थाल सजा कर मैं ने ही वरवधू को गृहप्रवेश कराया था. बनारसी साड़ी में लिपटी हुई सिमटी सी संकुचित सी खड़ी थी.

अशोक ने उसे मेरा परिचय देते हुए कहा, "ये मेरी बड़ी दीदी हैं, मुझ से 10 साल बड़ी हैं, मेरे लिए मां समान हैं."

दोनों ने मेरे पैर छुए. मैं ने भी दोनों को प्यार से गले लगा लिया. विवाह के बाद की प्रथाएं संपन्न करवा कर मैं वापस दिल्ली लौट आई.

१ महीने बाद भाभी की जुड़वा बच्चियों हुईं, जिन का नाम सिया और जिया रखा गया.

प्रसव के बाद भाभी बहुत कमजोर हो गई थीं. अतः घर का सारा कार्यभार शोभा ने संभाल लिया. उसे बच्चों से बहुत प्यार था. वह बच्चों का खयाल बहुत उत्साहित हो कर रखती थी.

मां सारी रिपोर्ट विस्तार से मुझे फोन पर बतलाया करती थीं. बच्चों के प्रति शोभा का अपनत्व देख कर भाभी को बहुत अच्छा लगता था.

जब सिया और जिया का नर्सरी स्कूल में दाखिला हुआ तो शोभा उन्हें तैयार करने से ले कर उन के जूते पौलिश करती, उन्हें नाश्ता करवा के टिफिन पैक कर के उन के स्कूल बैग में रख देती और टिफिन पूरा खत्म करना है, यह भी हिदायत दे देती थी. कभीकभी उन को होमवर्क करने में भी वह मदद करती थी. घर में सब सुचारु रूप से चल रहा था.

शोभा के विवाह को 4 वर्ष हो गए थे. मां जब भी मुझे फोन करती थीं, उन की बातों में कुछ बेचैनी का आभास होता था. वे दिल की मरीज थीं. मैं ने जोर दे कर उन की बेचैनी का कारण जानना चाहा, तो उन्होंने बताया, "अब अशोक की शादी को 4 साल हो गए हैं. अगर उस को एक बेटा हो जाता तो मैं पोते का मुंह देख कर दुनिया से जाती.

"न जाने कब मुझे बुला लें," मैं उन्हें सांत्वना देती रहती थी कि धैर्य रखो. सब ठीक हो जाएगा.

मैं ने मां की इच्छा शोभा तक पहुंचा दी तो वह हंस कर बोली, "दीदी आजकल पोता और पोती में कोई फर्क नहीं होता. सिया और जिया भी तो अपनी हैं. वही मेरे बच्चे हैं,"

बच्चों के प्रति उस की आत्मीयता मुझे बहुत अच्छी लगी. जिस बात का डर था, वही हुआ. अचानक मां को दिल का दौरा पड़ा और पोते की चाहत लिए हुए वे इस दुनिया से चल बसीं.

शोभा के विवाह को ६ वर्ष हो चुके थे. मैं ने लक्ष्य किया कि अब उस के मन में संतान की चाह प्रबल हो रही थी. अशोक ने कई डाक्टरों से संपर्क किया. कुछ डाक्टरी जांच भी हुई, किंतु नतीजा संतोषप्रद नहीं था. मेरे आग्रह पर दोनों दिल्ली भी आए. मेरी जानकार डाक्टर ने रिपोर्ट देख कर यही निष्कर्ष निकाला कि शोभा मां नहीं बन सकती.

अशोक ने सब तरह के उपचार किए, चाहे आयुर्वेदिक हो या होमियोपैथी. यहां तक कि कुछ रिश्तेदारों के कहने पर झाड़फूंक का भी सहारा लिया, किंतु निराश ही होना पड़ा. इस का असर शोभा के स्वास्थ्य पर पड़ने लगा.

शोभा प्रायः फोन कर के मुझे इधरउधर की बहुत सी खबरें देती रहती थी. उस ने एक घटना का जिक्र किया कि कुछ दिन पहले उस के किसी दूर के रिश्तेदार के यहां पुत्र जन्म का उत्सव था. वहां अशोक और शोभा के साथसाथ बड़े भैयाभाभी भी आमंत्रित थे. वहां पहुंच कर जब शोभा ने नवागत शिशु को पालने में झूलते देखा तो वह अपने को रोक ना पाई और आगे बढ़ कर बच्चे को गोद में उठा लिया. तभी पीछे से बच्चे की दादी ने उस के हाथ से बच्चे को छीन लिया और अपनी बहू को डांटते हुए कहा, "तेरा ध्यान कहां है? देख नहीं रही बच्चे को बांझ ने उठा लिया है."

शोभा ने बताया कि बड़ी भाभी भी वहीं खड़ी थीं. यह बात बतलाते समय शोभा की आवाज में पीड़ा झलक रही थी. मेरा मन संवेदना से भर उठा.

आशोभा ने बतलाया कि अब सिया और जिया उस के पास नहीं आती हैं. या यों कहिए कि भाभी उन बच्चों को शोभा के पास नहीं आने देतीं. इस का कारण भी वह समझ गई थी.

बांझपन का एहसास शोभा को अंदर ही अंदर खोखला कर रहा था. मैं अपनी गृहस्थी में बहुत व्यस्त हो गई थी. मेरे दोनों बच्चे विवाह योग्य थे. अगले वर्ष मेरे पति रिटायर होने वाले थे. अतः हम भविष्य की योजनाओं में व्यस्त हो गए थे. कभीकभी मैं शोभा को फोन कर के उन की कुशलक्षेम जान लेती थी.

फिर एक दिन अशोक का फोन आया. बातचीत से लगा कि वह बहुत परेशान है. मैं ने ३-4 दिन के लिए जयपुर का प्रोग्राम बना लिया. फीकी मुसकराहट से शोभा ने स्वागत किया. वह बहुत कमजोर हो गई थी. अशोक उस की स्थिति से बहुत चिंतित हो गया था. मुझे लगा कि 'बांझ' शब्द ने उस को भीतर तक आहत कर दिया है.

वह बोली, "अब तो सिया और जिया भी मेरे पास नहीं आती."

मैं ने प्यार से शोभा को अपने पास बैठाया और कहा, "मेरी बात ध्यान से सुनो और समझने की कोशिश करो. मैं चाहती हूं कि तुम किसी नवजात शिशु को गोद ले लो या कुछ अच्छी संस्थाएं हैं, जहां से बच्चे को लिया जा सकता है. ऐसा करने से एक बच्चे का भला हो जाएगा. उसे एक प्यारी मां मिल जाएगी और तुम्हें एक प्यारा बच्चा मिल जाएगा. यह एक नेक कार्य होगा. एक बच्चे का जीवन अच्छा बन जाएगा. तुम चाहो तो इस में मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूं."

लेकिन शोभा ने गंभीरता से उत्तर दिया, "दीदी, मैं अपनी तकदीर तो बदल नहीं सकती. यदि मेरी तकदीर में संतान का सुख लिखा ही नहीं है तो गोद ले कर भी मैं सुखी नहीं रह पाऊंगी," कुछ रुक कर वह फिर बोली, "दीदी, मैं अपनी कोख से जन्मा बच्चा चाहती हूं, गोद लिया हुआ नहीं."

वह अपने फैसले पर अडिग थी और मैं उस के फैसले के आगे निरुत्तर हो गई.

15 दिन बाद अशोक का फोन आया, वह आवाज से बहुत परेशान लग रहा था. उस ने बताया कि शोभा अब अकसर बीमार रहती है. उसे भूख नहीं लगती है और जबरदस्ती कुछ खाती है तो हजम नहीं होता उलटी हो जाती है. मैं ने सलाह दी कि तुरंत डाक्टरी जांच करवाओ. शोभा की तरफ से मुझे चिंता हो गई. अतः अशोक को सहारा देने के मकसद से मैं ने ३-4 दिन का जयपुर जाने का कार्यक्रम बना लिया.

अशोक ने शोभा के सारे टेस्ट करवा लिए थे. मेरे पहुंचने के अगले दिन वह अस्पताल से रिपोर्ट ले आया. वह बहुत उदास था. मेरे पूछने पर उस ने बताया कि शोभा की किडनी में कैंसर है, जो बहुत फैल गया है. अगर एक महीने पहले जांच करवा लेते तो शायद आपरेशन द्वारा किडनी निकाल देते, लेकिन अब तो कैंसर किडनी के बाहर तक फैल गया है. एक और विशेष बात जो डाक्टर ने बतलाई, वह यह कि शोभा प्रेग्नेंट भी है. प्रेगनेंसी की अभी शुरुआत ही है. एक हफ्ते बाद निश्चित तौर पर पता चल पाएगा. अचरज से मेरा मुंह खुला रह गया. समझ नहीं आया कि दुखी होऊं या खुशी मनाऊं.

शोभा ने मेरी और अशोक की बातें सुन ली थीं. वह मुसकराते हुए बोली, "दीदी, अशोक तो यों ही घबरा जाते हैं. मैं सहज में इन का पीछा छोड़ने वाली नहीं हूं और अब तो मुझे जीना ही है. उस की बातें आज भी मेरे कानों में गूंज रही हैं.

बाद में अशोक ने मुझे बतला दिया था कि डाक्टरों के अनुसार गर्भ को गिरा देने में ही बेहतरी है, क्योंकि कैंसर किडनी से बाहर निकल कर फैल रहा है, अगर तुरंत आपरेशन कर के किडनी निकाल भी दें, फिर भी शोभा का जीवन एक वर्ष से अधिक नहीं होगा और अगर गर्भपात नहीं करवाया तो कैंसर के आपरेशन के बाद की थेरेपी से बच्चे पर बुरा असर पड़ सकता है. या तो वह बचेगा ही नहीं और अगर बच भी जाए तो एब्नार्मल भी हो सकता है. अतः डाक्टर की राय में गर्भपात ही उचित होगा.

शोभा ने सबकुछ सुन लिया था. वह खुश नजर आ रही थी. वह बोली, "दीदी, मुझे यही खुशी है कि अब मुझे कोई बांझ नहीं कहेगा. डाक्टरों का निर्णय ठीक ही है. मेरे जीवन का सूर्य अस्त हो रहा है. मैं बच्चे को देख पाऊंगी या नहीं, पता नहीं. अगर बच्चा बच भी गया और विकलांग हो गया तो और भी दुःख होगा. तसल्ली यही है कि अब मेरे ऊपर से 'बांझ' होने का लांछन हट गया. अब मैं शांतिपूर्वक मर सकूंगी."

सहसा कार एक झटके के साथ रुक गई. सुनील ने ब्रेक मारा था, क्योंकि सामने एक बड़ा सा गड्ढा आ गया था. मेरी विचार श्रृंखला टूट गई. अब हम जयपुर की सीमा में पहुंच गए थे. बाजार के बीच से गुजरते हुए याद आया कि यहां कई बार शोभा के साथ चाट खाने आती थी, फिर खूब शौपिंग कर के हम दोनों शाम तक घर पहुंचते थे. अब तो केवल याद ही बाकी है.

ठीक साढ़े ९ बजे हम घर पहुंच गए. गाड़ी की आवाज सुन कर अशोक बाहर आ गया. सहारा दे कर उस ने गाड़ी से उतारा और मेरे गले से लग कर जोर से रो पड़ा. अंदर पहुंच कर देखा, शोभा का शव भूमि पर रखा था, बड़ी शांत मुख मुद्रा थी जैसे कुछ कहना चाहती हो. मैं अपने को ना रोक सकी और फफक कर रो पड़ी.

वह समाप्त हो गई. १ दिन बाद बहुत बोझिल मन से हम दोनों वापस लौट आए. रास्तेभर सोचती रही कि समाज के उलाहनों ने शोभा को बहुत चोट पहुंचाई, लेकिन मरने से पहले उसे यह खुशी थी कि वह बांझ नहीं थी, पर बच्चे की ख्वाहिश अधूरी ही रह गई.

मोदी-उद्बोधन जागृत राष्ट्र के हौसलों की उड़ान

ललित गर्ग

प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी साफ़ कर दिया है कि भविष्य में अगर पाकिस्तान से कभी बात होगी तो केवल आतंकवाद और पीओके पर ही बात होगी। उन्होंने कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि टेरर और टॉक, टेरर और ट्रेड एक साथ नहीं हो सकते। ऑपरेशन सिंदूर, पाकिस्तान के जवाबी हमले तथा युद्ध विराम के बाद राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कड़े एवं स्पष्ट शब्दों में न केवल पाकिस्तान को चेताया बल्कि उसको उसकी ज़मीन भी दिखाई। उन्होंने आतंकवाद के ख़िलाफ़ भारत की प्रखर एवं प्रभावी नीति को पूरी दुनिया के सामने बड़ी स्पष्टता और दृढ़ता के साथ रखा। उनका संबोधन न केवल भारत की भावना की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह हमारे देश के सैन्य, कूटनीतिक, नैतिक बल की प्रस्तुति एवं दो टूक संदेश है, जिसमें करोड़ों तनी हुई मुट्ठियों की चेतावनी भी है। यह कोरा उद्बोधन नहीं, बल्कि एक जागृत राष्ट्र के साहस एवं हौसलों की उड़ान है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने आतंकवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई में नई लकीर खींची और नये पैमाने तय किये। पाकिस्तान को समझौते की गुहार को भी सुना, एक बड़े मकसद और व्यापक हित में भारत ने शांति की राह चुनी। पहले से ही युद्धों में उलझे विश्व के लिए भारत का यह कदम आशा एवं उम्मीद की बहुत बड़ी किरण है। लेकिन पाकिस्तान पर एक्शन सिर्फ स्थगित हुआ है, समाप्त नहीं। 22 मिनट का यह संबोधन पाकिस्तान के लिये एक सीख भी है और सबक भी। साथ ही यह एक विशाल एवं विराट इतिहास को समेटे हुए नये भारत के नये संकल्पों की सार्थक प्रस्तुति है।

प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी साफ़ कर दिया है कि भविष्य में अगर पाकिस्तान से कभी बात होगी तो केवल आतंकवाद और पीओके पर ही बात होगी। उन्होंने कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि टेरर और टॉक, टेरर और ट्रेड एक साथ नहीं हो सकते। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेनाओं के शौर्य और पराक्रम की भी उन्होंने खुल कर सराहना की एवं वीरगाथा सुनाई है। भारतीय सेनाओं पर जहां पूरे देश को नाज़ है, वहीं प्रधानमंत्री के सशक्त नेतृत्व पर समूचे देश को भरोसा है और आज हमारा देश समृद्धशाली और शक्तिशाली होने के साथ ही विकसित भारत के रूप में तेजी से उभर रहा है। प्रत्येक भारतीय की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। आतंकवाद के समूल नाश के लिए हमारी सरकार कटिबद्ध है। सिंदूर पोंछने का अंजाम अब हर आतंकी को पता चल गया है। मोदी ने साफ किया कि अब वो दौर चला गया जब भारत परमाणु हमले के नाम पर ब्लैकमेल होता था। अब अगर फिर से हमला हुआ तो पाकिस्तान व आतंकवादियों को अलग-अलग नहीं देखा जाएगा। आतंक की जड़ों पर फिर से प्रहार किया जाएगा और इस बार का प्रहार विनाशकारी एवं विध्वंसक होगा। पाकिस्तान द्वारा पोषित एवं पल्लवित आतंकवाद उसी के सर्वनाश का कारण बनेगा। पाक को बचना है तो उसे आतंकी ढांचे नष्ट करने होंगे। उन्होंने कहा कि हमारी मिसाइलों ने ड्रोन ने पाक में न सिर्फ आतंकी ठिकानों को नष्ट किया बल्कि इसके साथ सौ से अधिक खूंखार आतंकियों को भी मार गिराया। पाक में आतंकवादियों के लिये जो जगह एवं संवेदनाएं हैं, उसको दुनिया ने भी देखा। भारत की सर्जिकल स्ट्राइक में मरे दुर्दांत आतंकवादियों को अंतिम विदाई देने को पाक सेना के बड़े अधिकारी उतावले थे। पिछले तीस में पाकिस्तान ने आतंकवाद की फसल को सींचने के लिये जो संरचना अपने देश में तैयार की है, उससे निकले आतंकवादियों ने भारत को ही बार-बार लहूलुहान नहीं किया बल्कि ब्रिटेन तथा अमेरिका के 9/11 जैसे हमलों को दुनिया के दूसरे हिस्सों में अंजाम दिया है। मोदी ने स्पष्ट किया कि पहलगाम आतंकी हमले में धर्म पूछकर निर्दोष पर्यटकों की हत्या करने वाले आतंकवादी भारतीय समाज के साम्प्रदायिक सौहार्द एवं समरसता को नुकसान पहुंचाने में पूरी तरह विफल रहे हैं। प्रधानमंत्री ने साहस एवं निर्भीकता से पाक की आतंकी मानसिकता को दुनिया के सामने उजागर किया। आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखा जाएगा। बुद्ध पूर्णिमा के दिन देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने साफ किया है कि यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन आतंकवाद का भी नहीं है। भारत सदियों से बुद्ध की संस्कृति व विचारों का पक्षधर रहा है। लेकिन शांति का रास्ता शक्ति के रास्ते से ही होकर जाता है और भारत ने अपनी शक्ति को दिखाते हुए न केवल पाकिस्तान को पस्त किया बल्कि दुनिया को भी चौंकाया भी है। बिना लाग-लपेट के प्रधानमंत्री ने साफ किया कि भारतीय शांति की नीति को कमजोरी न माना जाए, वक्त आने पर हम शक्ति दिखाने से भी नहीं चूकेंगे। अंधेरों को चीर कर उजाला की ओर बढ़ते भारत की महान यात्रा के लिये सबके जागने, संकल्पित होने एवं आज़ादी के अमृतकाल काल को अमृतमय बनाने के लिये दृढ़ मनोबली एवं सकारात्मक होने का आह्वान है।

मोदी ने भारतीय वैज्ञानिकों की मेधा को सराहते हुए कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक ने बता दिया है कि भारत आधुनिक तकनीक से युद्ध के लक्ष्यों को हासिल करने में सक्षम है। भारत ने स्वदेशी प्रयासों व आत्मनिर्भरता के संकल्प के साथ देश को सुरक्षा कवच देने में कामयाबी हासिल की है। ये तकनीकें इक्कीसवीं सदी की सामरिक चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम हैं। पाक द्वारा विश्व शक्तियों से हासिल मिसाइलों व ड्रोन को भारतीय वायु प्रतिरक्षा तंत्र ने जिस तरह नाकाम किया, उसने भारत के रक्षा उत्पादों की विश्वसनीयता पर मोहर लगाई है। हम भूल इन के वारफेयर मानकों की कसौटी पर खरे उतरे हैं। जो मेड इन इंडिया हथियारों की विश्वसनीयता को वैश्विक स्तर पर स्थापित करेगा। हमें आने वाले कल के लिए संघर्ष करना है। हमें विश्व की ओर ताकने की आदत छोड़नी होगी, राजनीतिक संकीर्णता से भी ऊपर उठना होगा, जिन्हें भारत पर विश्वास है, अपनी संस्कृति, अपनी बुद्धि और विवेक पर अभिमान है, उन्हें कहीं अंदर में अपनी शक्ति का भान है, वे जानते हैं कि भारत आज पीछे पीछे चलने की मानसिकता से मुक्ति की ओर कदम बढ़ा चुका है और ये स्थितियां हमने पाक के खिलाफ एक्शन में देख ली है। मोदी ने भारतीय समाज में एकजुटता को अपरिहार्य बताया और कहा कि जब हमारी संप्रभुता और नागरिकों के जीवन पर संकट आएगा तो मुंहतोड़ जवाब जरूर दिया जाएगा। उन्होंने देश के लोगों को भरोसा दिलाया कि भारतीय सेना और सुरक्षा बल किसी भी चुनौती के मुकाबले के लिये तैयार हैं। तब तक तैयार रहेंगे जब तक आतंक के अड्डे खंडहरों में तब्दील नहीं हो जाते। सीमाओं पर शांति इस बात पर निर्भर करेगी कि पाक आतंकवाद को लेकर क्या रवैया अपनाता है। उन्होंने देश की माता-बहनों और बेटियों को आश्वस्त किया कि सरकार का ऑपरेशन सिंदूर उनकी अस्मिता व सुरक्षा के लिये समर्पित था। उस पर किसी कीमत पर आंच नहीं आने दी जाएगी। यह उद्बोधन भारत की भावी सुरक्षित एवं सशक्त दशा-दिशा रेखांकित करते हुए इसे विश्व की महाताकत बनाने का आह्वान है। यह शांति का उजाला, समृद्धि का राजपथ, उजाले का भरोसा एवं महाशक्ति बनने का संकल्प है।

मोदी ने अपने इस संबोधन से अनेक निशाने साधे हैं। उनके अनुसार 2047 तक विकसित मुल्क बनाने के लिए पूरी जी-जान लगाकर दौड़ना होगा। पाक एवं क्षेत्रीय अस्थिरता इसमें बड़ी बाधा है, और भारत ने फिलहाल उसका इलाज कर दिया है। पाकिस्तान तक सख्त संदेश पहुंच चुका है। इस टकराव के खात्मे न बढ़ने और भारत के फिर से अपने लक्ष्य की ओर चलने से विश्व राजनीति एवं आर्थिक विकास में नई आशा का संचार हुआ है। मोदी के पाक के ख़िलाफ़ एक्शन को स्थगित करने की ख़ुशख़बरी के साथ दुनिया में दो बड़ी सकारात्मक ख़बरें भी आशा की किरण बनी। एक आशा की किरण है अमेरिका और चीन के बीच जारी टैरिफ वॉर का टल जाना, दूसरी किरण तीन साल से ज़्यादा समय से युद्ध में उलझे रूस और यूक्रेन में सुलह के लिए दोनों देशों के बीच पहली बार सीधी बातचीत होना। यूक्रेन युद्ध, टैरिफ वॉर और भारत-पाक तनाव ने दुनिया को गंभीर संकट में डाल दिया था। तीनों मोर्चों पर आई सकारात्मक ख़बरों का असर भारत सहित दुनिया के शेयर बाज़ारों में आया उछाल है। इनके चलते भारत में नीतिगत स्थिरता, बेहतर समन्वय और ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस की स्थिति भी पुनः रफ्तार पकड़ेगी। ताज़ा घटनाक्रम से भारत एक आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर एवं सशक्त राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है।

लावारिस मिलती नवजात बच्चियाँ: झाड़ियों से जीवन तक

हरियाणा के हिसार जिले के अग्रोहा में सतीश डूडी ने एक नवजात बच्ची को गोद लेकर ममता और इंसानियत की मिसाल पेश की। यह बच्ची जन्म के कुछ घंटों बाद झाड़ियों में लावारिस पाई गई थी। सतीश का यह साहसिक कदम समाज के उस निष्ठुर चेहरे को बेनकाब करता है जो बेटियों को बोझ समझता है। यह कहानी बताती है कि ममता का रिश्ता खून से नहीं, अपनाने से होता है। यह कदम 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की असली आत्मा को दर्शाता है और समाज को एक नई सोच की प्रेरणा देता है।

--डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा के हिसार जिले के अग्रोहा में हाल ही में एक दिल को छू लेने वाली घटना सामने आई है।

गांव कुलेरी निवासी सतीश डूडी ने उस नवजात बच्ची को गोद लेकर इंसानियत और ममता की एक अनोखी मिसाल पेश की, जिसे जन्म के कुछ ही घंटों बाद उसके माता-पिता ने झाड़ियों में छोड़ दिया था। यह घटना न केवल एक मासूम जीवन को नया अवसर देने की कहानी है, बल्कि समाज की उस कठोर सच्चाई का भी पर्दाफाश करती है, जो आज भी बेटियों को बोझ समझती है।

लावारिस मिलती नवजात बच्चियाँ: एक कठोर सच्चाई

जब किसी सड़क किनारे, कूड़े के ढेर में, या किसी अस्पताल के बाहर एक नवजात बच्ची लावारिस पाई जाती है, तो यह महज एक खबर नहीं होती, बल्कि हमारे समाज के उस निष्ठुर चेहरे का आईना होती है, जिसे हम अक्सर अनदेखा करना चाहते हैं। यह केवल एक परित्यक्त जीवन नहीं, बल्कि उस मानसिकता का प्रतीक है, जो एक लड़की के जन्म को अभिशाप समझती है।

इस बच्ची को न जाने किस मजबूरी में त्याग दिया गया होगा, पर यह कहानी एक गहरी सामाजिक समस्या की ओर इशारा करती है। यह बच्ची, जिसे अपने जीवन की पहली सांसों में ही दर्द और बेरुखी मिली, शायद खुद नहीं जानती थी कि उसका जीवन किसी मसीहा की तलाश में था। लेकिन सतीश डूडी ने उसे अपनाकर दिखा दिया कि ममता का रिश्ता खून से नहीं, अपनाने से होता है।

सतीश डूडी का साहसिक कदम

अग्रोहा की झाड़ियों में मिली इस नन्ही जान के जीवन में सतीश डूडी एक मसीहा बनकर आए। उन्होंने उस बच्ची को अपनाकर यह साबित कर दिया कि इंसानियत केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं होती। यह एक ऐसा कदम है, जो न केवल उस बच्ची का भविष्य संवारने वाला है, बल्कि समाज को एक नया संदेश भी देता है – कि हर बच्चा महत्वपूर्ण है, हर जीवन मूल्यवान है।

सतीश का यह कदम समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत भी है। जहां एक ओर बच्चियों को लेकर नकारात्मक मानसिकता हावी है, वहीं सतीश का यह कदम समाज को एक नया संदेश देता है - कि हर बच्चा महत्वपूर्ण है, हर जीवन मूल्यवान है। यह कदम बताता है कि ममता और अपनापन किसी खून के रिश्ते का मोहताज नहीं होता।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ: असली अर्थ

सतीश का यह कदम 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की वास्तविक आत्मा को दर्शाता है। जब हम बेटी को अपनाने का साहस दिखाते हैं, तब ही हम समाज में वास्तविक बदलाव की नींव रखते हैं। यह घटना हमें बताती है कि सिर्फ नारों से नहीं, बल्कि कर्मों से बदलाव आता है। हमें केवल बेटियों के जन्म का स्वागत नहीं, बल्कि उनके पूरे जीवन का सम्मान करना होगा।

समाज की चुप्पी पर सवाल

यह घटना हमें समाज की उस चुप्पी पर भी सोचने पर मजबूर करती है, जहां नवजात बच्चियों को आज भी बोझ समझा जाता है। हम अपने बेटों को गर्व से पालते हैं, लेकिन बेटियों को अपनाने से डरते हैं। यह कहानी हमें बताती है कि असली साहस सिर्फ युद्ध में ही नहीं, बल्कि नन्हीं जानों को सहारा देने में भी होता है।

इस बच्ची का लावारिस मिलना समाज की उस गहरी मानसिकता का प्रतीक है, जो आज भी लड़कियों को आर्थिक बोझ, परिवार की प्रतिष्ठा पर खतरा और वंशवृद्धि में बाधा के रूप में देखती है। 'बेटी पराया धन' जैसी कहावतें हमारे सामूहिक अवचेतन में इतनी गहराई तक घुल गई हैं कि उनके प्रभाव से उबर पाना आसान नहीं।

समाधान की राह

समाज को यह समझना होगा कि बेटियाँ बोझ नहीं, बल्कि शक्ति और संवेदना की प्रतीक हैं। इसके लिए:

सामाजिक जागरूकता: बेटियों को समान अधिकार और सम्मान देने के लिए निरंतर जागरूकता अभियान चलाने होंगे।

शिक्षा का प्रसार: लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

आर्थिक स्वतंत्रता: महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए स्वरोजगार, प्रशिक्षण और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना होगा।

कठोर कानून: लिंग भेदभाव और नवजात परित्याग के मामलों में सख्त कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करनी होगी।

अंतिम विचार

नवजात बच्चियों का परित्याग केवल एक व्यक्तिगत अपराध नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक विफलता का प्रतीक है। जब तक हम अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे, तब तक न तो कानून सफल होंगे और न ही सरकारी योजनाएँ। हमें यह समझना होगा कि बेटी का जन्म केवल एक जीवन नहीं, बल्कि एक पूरे परिवार, समाज और देश के उज्ज्वल भविष्य की नींव है। सतीश डूडी की यह कहानी एक प्रेरणा है, एक सबक है, और एक चुनौती भी, कि हम अपने आसपास के अनचाहे जीवन को अपनाकर दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकते हैं।

झाड़ियों से जीवन तक

झाड़ियों में पड़ी, एक नन्ही कली,
आधी सर्द हवाओं में काँपती हुई सी।
उसकी आँखों में सवाल था, बिना जवाब के,
कौन होगा जो उसे अपनी ममता दे ?

कूड़े के ढेर में बसी एक कहानी,
बच्ची की सिसकियाँ, ढूँढ रही थीं नई सुबह की झाँकी।
हर एक नन्हे हाथ में, आसमान छूने की चाह,
सिर्फ सर्द हवा ने उसे दिया था साथ।

लेकिन फिर एक दिल ने उसे देखा,
एक अनजान हाथ ने उसे अपनी गोदी में लिया।
ममता की राह में बसी एक आशा,
जहाँ हर दर्द को आशीर्वाद बना दिया।

नवजीवन को एक आश्रय मिला,
किसी ने उसे जीवन की राह दिखलायी।
झाड़ियों से निकली वह नन्ही कली,
अब नई पहचान, एक उम्मीद की शख्सियत बनायी।

यह सिर्फ एक कहानी नहीं है,
यह हमारे समाज का चेहरा है, जो अक्सर झूठा साबित होता है।
हर लावारिस बच्ची का हक है एक जीवन,
यह हमारी जिम्मेदारी है, सबको दें इसका सम्मान।

युद्धकाल में सेना व सरकार के शौर्य और रणनीति पर सवाल उचित नहीं

दीपक कुमार त्यागी

मोदी सरकार ने सेना के वीर योद्धाओं पर पूरा भरोसा जताया। जिसके चलते ही भारत ने पाकिस्तान के ख़िलाफ़ "छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं घर में घुसकर मारेंगे" की रणनीति पर तेज़ी के साथ युद्ध के मैदान में कार्य करना शुरू कर दिया था।

पूरी दुनिया यह अच्छे से जानती है कि इस्लामिक देश पाकिस्तान आतंक व आतंकियों को पालता-पोसता है और उनके नापाक मंसूबों को पूरा करने में सहयोग देता है। फिर भी दुनिया के ताकतवर देश पाकिस्तानी उर्फ आतंकिस्तान के द्वारा पनाह दिये गये आतंकियों से पीड़ित होने के बाद भी उसको आतंकी देश तक घोषित नहीं करते हैं। वहीं पाकिस्तान के विभिन्न हिस्सों में सुरक्षित जगहों पर पनाह लिए हुए मानवता के सबसे बड़े दुश्मन आतंकवादियों के ख़िलाफ़ लड़ाई में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिले उनके खात्मे के लक्ष्य को लेकर के मां भारती के वीर जांबाज सपूतों ने 6-7 मई 2025 की रात को जान हथेली पर रखकर के 1 बजकर 4 मिनट ऑपरेशन सिंदूर शुरू कर दिया था। जिस ऑपरेशन के अंतर्गत पीओके व पाकिस्तान में घुसकर के आतंकियों के 9 महत्वपूर्ण लक्षित ठिकानों पर सेना के वीर योद्धाओं ने एयर स्ट्राइक की थी। पाकिस्तान में घुसकर आतंकियों पर एयर स्ट्राइक करने की खबर सुनते ही पूरी दुनिया भौंचक्का रह गई थी। एयर स्ट्राइक के बाद आतंकियों के आका पाकिस्तान ने भारत के शहरों, सैन्य ठिकानों, स्कूल, कॉलेज, गुरुद्वारा, मंदिर, अस्पताल आदि को गोलीबारी, बमबारी, ड्रोन, मिसाइल आदि से निशाना बनाना शुरू कर दिया था। लेकिन जब कुछ समय के बाद ही भारतीय वीरों ने पाक के इस दुस्साहस का जवाब बहुत जबरदस्त ढंग से धरातल पर देना शुरू कर दिया, तो उससे पाक के विभिन्न शहरों में भारी जान-माल का नुक़सान होना शुरू हो गया था, जिसे देखकर के पाकिस्तान की सेना व बड़बोले हुक्मरानों के पैरों तले से जमीन खिसकने लग गई थी, वह भारत के साथ-साथ दुनिया भर के देशों से अपनी जान बचाने के लिए मदद करने की गुहार लगाने लग गया था।

हालांकि भारत के हुक्मरानों ने भी दो टूक शब्दों यह स्पष्ट कर दिया था कि भारत हमेशा शांति का पक्षधर रहा हैं, लेकिन शांति की बातों का चोला ओढ़कर के भारत में आतंकवाद फैलाने का का काम अब एक साथ नहीं चल सकता है, अब तो पाकिस्तान के द्वारा भारत में प्रायोजित आतंकी घटना भारत के ख़िलाफ़ पाक के द्वारा युद्ध माना जायेगा और भारत पाकिस्तान को गोली का जवाब अब गोले से देने का कार्य करेगा। जिससे भयभीत होकर पाक ने 10 मई की दोपहर को भारत के डीजीएमओ से फोन पर सीज़फायर करने के लिए बात की, जिसके चलते ही 10 मई की शाम को दोनों देशों के बीच सीज़फायर की घोषणा हो गयी। लेकिन सीज़फायर की घोषणा होती ही जो राजनीतिक दल पाकिस्तान के ख़िलाफ़ हर तरह की छोटी-बड़ी कार्रवाई में भारत सरकार के साथ एकजुट होकर खड़े हुए थे, उसमें से कुछ दलों के चंद राजनेताओं ने अब क्षणिक राजनैतिक लाभ हासिल करने के लिए सेना व मोदी सरकार के शौर्य और रणनीति पर प्रश्नचिन्ह लगाना शुरू कर दिया। जबकि सरकार ने नपे-तुले शब्दों में ही सीज़फायर करने की घोषणा करते समय ही दुनिया से स्पष्ट कर दिया था कि भारत युद्ध का पक्षधर नहीं है लेकिन आतंक व आतंकियों के ख़िलाफ़ भारत की जीरो टॉलरेंस नीति सख्ती के साथ जारी रहेगी, आतंकवादियों के आकाओं को अब बख्शा नहीं जायेगा। लेकिन फिर भी क्षणिक स्वार्थ व ओछी राजनीति के चलते हुए ही युद्धकाल के दौर में ही चंद लोगों व राजनेताओं के द्वारा सेना व सरकार के शौर्य और रणनीति पर सवाल खड़े करने शुरू करने की साज़िश देश में बहुत ही तेज़ी से होने लगी है। वैसे देखा जाए तो यह वही चंद लोग हैं जो जंग के समय भी सोशल मीडिया के ताकतवर प्लेटफार्म पर देश के दुश्मनों के साथ खुलकर खड़े थे और यह गैंग भारतीय सेना की कार्रवाई पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए पाकिस्तान को लाभ देने वाली पोस्ट तक सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर करने में लगे हुए थे, जो कि देशहित में बिल्कुल भी उचित नहीं है।

हालांकि 7 मई 2025 की सुबह भारत सरकार की प्रेस ब्रीफिंग से जब दुनिया को यह पता चला कि भारत की वीर सेना ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर के पहलगाम की "बैसरन घाटी" में हुए आतंकी हमले का बदला पाक में एयर स्ट्राइक करके ले लिया है, जिसमें सैकड़ों की संख्या में पाक के दुर्दांत आतंकियों के साथ-साथ आतंकियों के ट्रैनिंग सेंटर व लांच पैड तक तबाह हो गये हैं, तो उस वक्त सब भारत की वीरता को देख आश्चर्य चकित थे। भारत के हमलें में भारी नुक़सान उठाने के बाद से पाक के षड्यंत्रकारी हुक्मरान बुरी तरह से तिलमिला उठे हैं, जिसके चलते ही उन्होंने भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सीज़फायर का उल्लघंन करते हुए भारी गोलीबारी करनी शुरू कर दी थी, जिसमें हमारे कुछ वीर योद्धा व आम नागरिक भी शहीद हुए। रात में पाकिस्तान ने भारत में बहुत सारी जगहों पर ड्रोन व मिसाइल से हमला करके एक तरह से भारत के ख़िलाफ़ एक अघोषित युद्ध की शुरुआत कर दी थी। हालांकि इन हमलों को हमारे वीर योद्धाओं ने विफल करते हुए पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई करके उसको मुंहतोड़ जवाब देना शुरू कर दिया था, जिससे पाकिस्तान के अंदर से जान-माल के बहुत बड़े नुक़सान की खबरें अब बाहर आने लग गयी थी। जिससे आम लोगों की नज़रों में सेना के मां भारती के वीर सपूतों के साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भी वॉर नायक के रूप में छवि बन रही थी, जिस देखकर के मोदी विरोध में अंधे गैंग ने भारत के वीर योद्धाओं व सरकार पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए, सोशल मीडिया पर हैसटैग चला कर तत्काल भारत पाकिस्तान के इस अघोषित युद्ध को रोकने की मांग तक कर डाली थी।

काबिलियत और अंक: दोनों में फर्क समझें

अंक केवल एक व्यक्ति की किताबी जानकारी का प्रमाण होते हैं, न कि उसकी असल क्षमता का। असली काबिलियत जीवन की समस्याओं को हल करने, नई चीजें सीखने और परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता में होती है। हमें बच्चों को केवल अंकों की दौड़ में शामिल करने के बजाय उनकी व्यक्तिगत रुचियों, प्रतिभाओं और आत्मनिर्भरता को पहचानने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

प्रियंका सौरभ

बच्चों की शिक्षा का विषय हमेशा से ही समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। माता-पिता और शिक्षक, दोनों ही बच्चों की सफलता के लिए चिंतित रहते हैं, लेकिन कई बार यह चिंता एक दबाव का रूप ले लेती है। विशेष रूप से अंक या ग्रेड के मामले में, यह दबाव बच्चों की मानसिक सेहत पर गहरा असर डाल सकता है। इस लेख में हम इस मुद्दे की जड़ तक जाने की कोशिश करेंगे कि कैसे अंक और काबिलियत की वास्तविक परिभाषा के बीच के अंतर को समझना और स्वीकारना आवश्यक है।

अंक बनाम काबिलियत: एक बुनियादी भेद अक्सर माता-पिता अपने बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे हर विषय में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करें। वे यह मानते हैं कि अच्छे अंक अच्छे भविष्य की गारंटी हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि अंक केवल एक व्यक्ति की किताबी जानकारी का प्रमाण होते हैं, न कि उसकी असल क्षमता का। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जिसे कला, संगीत, खेल या तकनीकी कौशल में रुचि है, वह संभवतः गणित या विज्ञान में उतने अच्छे अंक न ला पाए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह कम लायक है। काबिलियत का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन में समस्याओं को हल करने की क्षमता, नई चीजें सीखने का जज़्बा और परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता है।

अंक प्रणाली का वास्तविक प्रभाव हमारे शिक्षा प्रणाली का ढांचा अभी भी पारंपरिक मानदंडों पर आधारित है, जहां अंकों को सफलता का एकमात्र पैमाना माना जाता है। इससे बच्चों में असुरक्षा और आत्म-संकोच की भावना विकसित होती है। कई बच्चे अपने माता-पिता की उम्मीदों पर खरे न उतर पाने के डर से मानसिक तनाव का सामना करते हैं। यह मानसिक दबाव उनकी आत्म-छवि और आत्मविश्वास को नुकसान पहुंचा सकता है। साथ ही, यह न केवल बच्चों की पढ़ाई पर बल्कि उनके सामाजिक संबंधों और मानसिक सेहत पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। बच्चों में आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास की भावना तभी विकसित होती है जब उन्हें बिना भय और दबाव के सीखने का अवसर मिले।

कैसे अंक प्रणाली बच्चों की रचनात्मकता को दबाती है अंक प्रणाली न केवल मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि बच्चों की रचनात्मकता और खोज की क्षमता को भी सीमित करती है। वे अपनी मौलिक सोच और रचनात्मकता को छोड़कर केवल अंकों की दौड़ में शामिल हो जाते हैं। यह समस्या केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्वभर में देखी जा रही है, जहां छात्रों को एक निर्धारित पाठ्यक्रम में

-प्रियंका सौरभ, रिसर्च स्कॉलर इन पॉलिटिकल साइंस, हरियाणा

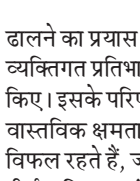

ढालने का प्रयास किया जाता है, बिना उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा को पहचानने की कोशिश किए। इसके परिणामस्वरूप, कई बच्चे अपनी वास्तविक क्षमता और रुचियों को पहचानने में विफल रहते हैं, जो कि उनके जीवन में दीर्घकालिक असंतोष का कारण बन सकता है।

समाज का नज़रिया और दबाव समाज का नज़रिया भी इस समस्या का एक बड़ा कारण है। अक्सर माता-पिता अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से करने लगते हैं। यह तुलना बच्चों में हीन भावना और जलन पैदा कर सकती है। साथ ही, यह उनके आत्मविश्वास को कमजोर कर देती है। बच्चों को यह महसूस होने लगता है कि उनकी पहचान केवल उनके अंकों से ही मापी जाती है, न कि उनके चरित्र, कौशल और मानवीय मूल्यों से। बच्चों का मानसिक विकास तभी संभव है जब उन्हें बिना किसी भय और दबाव के सीखने का अवसर मिले।

परिवर्तन की आवश्यकता हमें शिक्षा के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि एक समझदार, सशक्त और नैतिक नागरिक का निर्माण करना होना चाहिए। इसके लिए हमें अंकों से परे जाकर बच्चों की असल काबिलियत को पहचानने और उसे प्रोत्साहित करने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। हमें यह समझना होगा कि हर बच्चा अद्वितीय है और उसकी रुचियां, क्षमताएं और सपने भी अलग हैं।

बच्चों को समर्थन दें, दबाव नहीं माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को प्रेरित करें, न कि उन पर अनावश्यक दबाव डालें। हर बच्चा अनोखा होता है, उसकी सोच, रुचि और क्षमता भी अलग होती है। हमें चाहिए कि हम उन्हें अपने सपनों को पूरा करने की आजादी दें, न कि केवल समाज के तय किए गए मापदंडों पर खरा उतरने का बोझ डालें। बच्चों के साथ संवाद करें, उनकी समस्याओं को समझें और उन्हें आत्मनिर्भर बनने का मौका दें। केवल अच्छे अंक लाने पर ही नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान बनने पर ध्यान केंद्रित करें। उन्हें जीवन के हर पहलू में सफलता पाने का आत्मविश्वास दें।

अंक जीवन का एक छोटा हिस्सा हैं, लेकिन असल काबिलियत और नैतिकता जीवन का असली मूल्य है। इसलिए हमें चाहिए कि हम बच्चों को केवल अच्छे अंक लाने के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान बनने के लिए प्रेरित करें। बच्चों की पहचान उनके अंकों से नहीं, बल्कि उनके विचारों, कर्मों और चरित्र से होनी चाहिए। बच्चों की असली पहचान उनके भीतर छुपी क्षमताओं, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता में होती है। यही वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। जीवन केवल अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक व्यापक दृष्टिकोण और सकारात्मक सोच से भरा हुआ होना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस: रिश्तों की पुनर्संवेदना का पर्व

परिवार वह पवित्र आलिंगन है, जहाँ जीवन की पहली साँस प्रेम की गर्माहट में खिलती है, जहाँ हर आंसू विश्वास की गोद में सुकून पाता है, और जहाँ सपनों को संस्कारों के पंख मिलते हैं। यह केवल रक्त का बंधन नहीं, बल्कि वह जीवंत धड़कन है, जो समाज की नींव को अटल रखती है, संस्कृति को अमर बनाती है और राष्ट्र को गौरव देती है। परिवार वह पहला गुरुकुल है, जहाँ इंसान न केवल बोलना-चलना सीखता है, बल्कि हँसना, रोना, माफ करना और जीवन की हर चुनौती को गले लगाना भी सीखता है। यह वह आश्रय है, जो तूफानों में ढाल बनता है और खुशियों को सातवें आसमान तक पहुँचाता है। इसी अनमोल बंधन की महत्ता को रेखांकित करने के लिए हर वर्ष 15 मई को अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है। यह दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक वैश्विक आह्वान है – परिवार को सशक्त करने, इसकी चुनौतियों को परास्त करने और इसके प्रेम को चिरस्थायी बनाने का।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1993 में इस दिवस की नींव रखी, और 1994 से यह विश्व भर में एक सशक्त मंच के रूप में उभरा है। यह परिवार की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक भूमिका को न केवल उजागर करता है, बल्कि आधुनिक युग की जटिलताओं से उत्पन्न खतरों पर भी गंभीर चिंतन की माँग करता है। आज वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी क्रांति ने जीवन को अभूतपूर्व गति दी है, लेकिन परिवार के मूल ढाँचे को भी गहरे रूप से हिला दिया है। संयुक्त परिवार, जो कभी हँसी-खुशी और सहयोग का प्रतीक थे, अब टूटकर एकल परिवारों में सिमट रहे हैं। रिश्तों में स्नेह की जगह औपचारिकता ने ले ली है, और आपसी संवाद को सन्नाटे ने घेर लिया है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और इंटरनेट ने हमें वैश्विक गाँव से जोड़ा, पर अपनों से दूर कर दिया। माता-पिता के पास बच्चों के लिए समय नहीं, बच्चे डिजिटल दुनिया में खोए हैं, और बुजुर्ग उपेक्षा के साये में जी रहे हैं। यह वही परिवार है, जो कभी हमारी सबसे बड़ी ताकत था। क्या हमने इसे खोने का जोखिम मोल लिया है?

इस वर्ष, 2025 में, अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस की थीम "परिवार और जलवायु कार्रवाई: एक स्थायी भविष्य का निर्माण" एक क्रांतिकारी संदेश लेकर आई है। यह थीम हमें चेताती है कि जलवायु परिवर्तन कोई सुदूर समस्या नहीं, बल्कि हर परिवार की चौखट पर दस्तक देने वाला संकट है। बढ़ता तापमान, जल संकट, बाढ़, सूखा, खाद्य असुरक्षा और प्राकृतिक आपदाएँ हर घर को प्रभावित कर रही हैं। यह केवल सरकारों या पर्यावरणविदों की ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि हर परिवार का कर्तव्य है कि वह इस वैश्विक चुनौती के खिलाफ़ खड़ा हो। परिवार वह पहली पाठशाला है, जहाँ बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम और ज़िम्मेदारी का बीज बोया जा सकता है। छोटे-छोटे कदम – जैसे बिजली और पानी की बचत, प्लास्टिक का बहिष्कार, वृक्षारोपण, रीसाइक्लिंग और जैविक जीवनशैली को अपनाना – न केवल पर्यावरण को बचाएंगे, बल्कि परिवार के

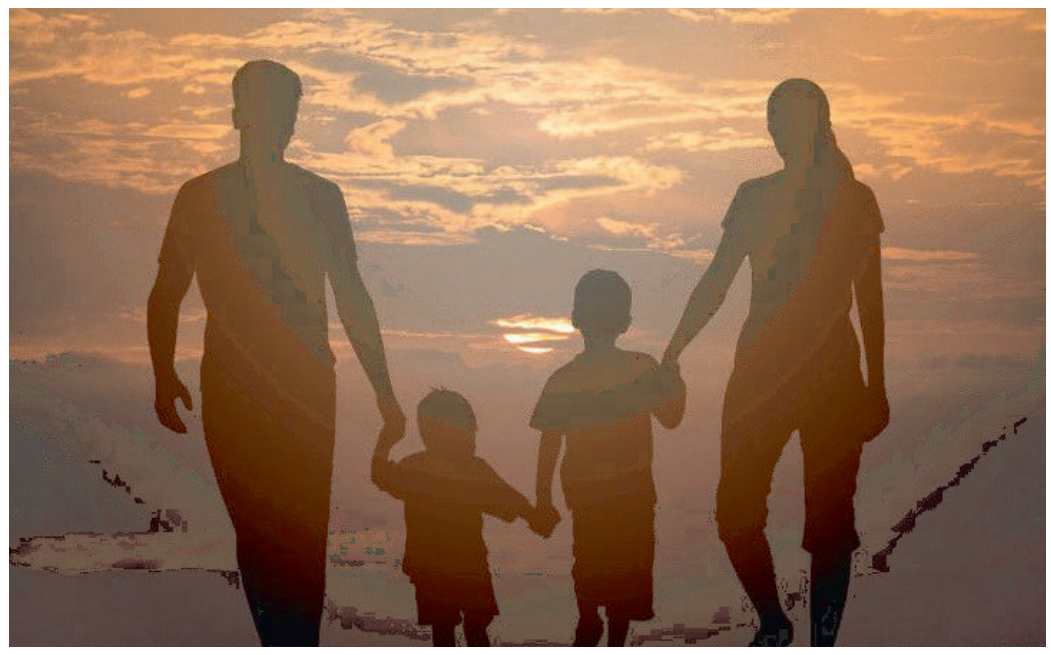

सदस्यों को एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट भी करेंगे।

बच्चों को पर्यावरण संरक्षण का पाठ पढ़ाने की शुरुआत घर से होनी चाहिए। माता-पिता, दादा-दादी और बड़े भाई-बहन मिलकर उन्हें प्रकृति का सम्मान करना सिखाएँ। एक बच्चा जो पेड़ लगाना, पानी बचाना और कचरे को कम करना सीखता है, वह न केवल पर्यावरण का रक्षक बनेगा, बल्कि एक ज़िम्मेदार नागरिक भी। परिवार मिलकर सामुदायिक स्तर पर वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान या ऊर्जा संरक्षण जैसे कार्यों में हिस्सा ले सकते हैं। ये गतिविधियाँ न केवल धरती को हरा-भरा बनाएँगी, बल्कि परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और एकता को भी गहरा करेंगी। सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों और शिक्षण संस्थानों को भी परिवारों को जागरूक करने और उन्हें संसाधन उपलब्ध कराने में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। जब हर परिवार पर्यावरण के लिए अपने कर्तव्य को समझेगा, तभी हम एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की नींव रख सकेंगे।

लेकिन परिवार की मज़बूती केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है। यह वह आधार है, जिस पर समाज और राष्ट्र का भविष्य टिका है। एक सशक्त परिवार ही नैतिकता, सहानुभूति और सामाजिक ज़िम्मेदारी के मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाता है। पर आज हमें यह आत्मनिरीक्षण करना होगा – क्या हम अपने परिवार को वह समय, प्रेम और सम्मान दे रहे हैं, जिसका वे हकदार हैं? क्या हम अपने बुजुर्गों की कहानियों को सुनते हैं, बच्चों के सपनों को समझते हैं, और रिश्तों को स्नेह के धागे से बुनते हैं? अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस हमें यह सिखाता है कि परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि एक-दूसरे के लिए जीने का वादा है। यह हमें याद दिलाता है कि रिश्तों को सींचने के लिए समय, संवाद और समर्पण की ज़रूरत होती है। सरकारें और सामाजिक संगठन परिवारों को आर्थिक और सामाजिक सहायता दे सकते हैं, पर असली बदलाव तभी आएगा, जब हम अपने घर की चौखट से शुरुआत करें।

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस कोई औपचारिकता नहीं, बल्कि एक जागृति का आलम है। यह हमें यह सिखाता है कि परिवार वह अनमोल खज़ाना है, जिसे समय, विश्वास और प्रेम से सहेजना होगा। यह दिवस हमें प्रेरित करता है कि हम अपने परिवार को सिर्फ़ एक दिन नहीं, बल्कि हर दिन प्राथमिकता दें। हम अपने बच्चों को पर्यावरण का रक्षक बनाएँ, बुज़ुर्गों का सम्मान करें, और रिश्तों में प्रेम का दीप जलाएँ। क्योंकि जब परिवार एकजुट और सशक्त होगा, तभी समाज में सकारात्मकता, धरती पर हरियाली और विश्व में शांति का सूरज उगेगा। आइए, इस अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस पर हम संकल्प लें कि हम अपने परिवार को समय, स्नेह और समर्पण का उपहार देंगे। हम न केवल धरती को बचाने की शपथ लेंगे, बल्कि अपने रिश्तों को भी प्रेम और विश्वास के रंगों से सजाएँगे। क्योंकि परिवार नहीं, तो कुछ भी नहीं – यही जीवन का सत्य है, यही अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस का अमर संदेश है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

15 मई – अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस

दिलों का मिलन सपरिवार...!

हाँ, यहीं हैं खुशहाल परिवार,
इनके बीच नहीं कोई दीवार।
यहाँ छोटे-बड़े में खूब हैं प्यार,
रूठने-मनाने का हैं अधिकार।
आओ मिलकर ख़ुश हो जाए,
एक-दूसरे को उपहार दे आए।

हाँ, यहीं हैं खुशहाल परिवार,
इनके बीच नहीं कोई दीवार।
विश्वास प्यार जहाँ हैं बसता,
भटकने का नहीं कोई रस्ता।
जीवन में आती कई विपदाए,
वहीं तो हमें जीना सिखलाए।

हाँ, यहीं हैं खुशहाल परिवार,
इनके बीच नहीं कोई दीवार।
हो जाती ज़ब कभी-भी रार,
करते क्षमा बिन सोच-विचार।
बिना लिखावट का ये करार,
ये दिलों का मिलन सपरिवार।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

संयुक्त परिवार : मात्र समझौता नहीं, आज की "जरूरत"

प्रदीप कुमार वर्मा

कहते हैं कि परिवार से बड़ा कोई धन नहीं। पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं। मां के आंचल से बड़ी कोई दुनिया नहीं। भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं। और बहन से बड़ा कोई शुभ चिंतक नहीं। यही वजह है कि परिवार के बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। किसी भी देश और समाज की परिवार एक सबसे छोटी इकाई है। परिवार एक सुरक्षा कवच है और एक मानवीय संवेदना की छतरी भी। एक अच्छा परिवार बच्चे के चरित्र निर्माण से लेकर व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार से इतर व्यक्ति का बजूद नहीं है। इसलिए परिवार के बिना अस्तित्व के बिषय में कभी सोचा नहीं जा सकता। लोगों से परिवार बनता हैं और परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व बनता हैं। परिवार के इसी महत्व को जान और समझकर लोग आप संयुक्त परिवार को एक बार फिर से अपनाने लगे हैं।

देश और दुनिया में परिवार के दो स्वरूप मुख्य रूप से देखने को मिलते हैं। इनमें पितृसत्तात्मक एवं मातृ सत्तात्मक परिवार शामिल है। किसी भी सशक्त देश के निर्माण में परिवार एक आधारभूत संस्था की भांति होता है, जो अपने विकास कार्यक्रमों से दिनोंदिन प्रगति के नए सोपान तय करता है। कहने को तो प्राणी जगत में परिवार एक छोटी इकाई है। लेकिन इसकी मजबूती हमें हर बड़ी से बड़ी मुसीबत से बचाने में कारगर है। बीते सालों में यह देखने में आया है कि संयुक्त परिवार की जगह अब एकल परिवारों ने ले ली है। समाज के इस नए चलन न केवल परिवारों को बिखराव दिया है, वहीं, समूचे सामाजिक ताने-बाने पर भी संकट छा गया है। हालात ऐसे हैं कि एकल परिवारों के सदस्य अब रिश्तों के नाम तक भूलने लगे हैं, निभाने की बात तो और है। एकल परिवारों में लोग एकाकी जीवन जीने को मजबूर है और इससे उनका मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हो रहा है ।

इसी चिंता और देश और दुनिया में परिवार के महत्व को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने 1980 के

दशक के दौरान परिवार से जुड़े मुद्दों पर ध्यान देना शुरू किया। इसके बाद वर्ष 1983 में आर्थिक और सामाजिक परिषद सामाजिक विकास आयोग ने विकास प्रक्रिया में परिवार की भूमिका पर अपने संकल्प की सिफारिश की और महासचिव से निर्णय लेने वालों और जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने का अनुरोध किया। इसके साथ ही जनता को परिवार की समस्याओं और आवश्यकताओं के साथ-साथ उनकी जरूरतों को पूरा करने के प्रभावी तरीकों से अवगत कराया। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 9 दिसंबर 1989 के अपने संकल्प 44/82 में परिवार के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष की घोषणा की और 1993 में महासभा ने फैसला किया कि 15 मई को हर साल अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

सामाजिक संरचना के तौर पर परिवार का विवेचन करें तो परिवार जन्म, विवाह या गोद लेने से संबंधित दो या अधिक व्यक्तियों का समूह है, जो एक साथ रहते हैं। ऐसे सभी संबंधित व्यक्तियों को एक परिवार के सदस्य माना जाता है। उदाहरण के लिए यदि एक वृद्ध विवाहित जोड़ा, उनका बेटा ओर बहू, पोता-पोती और वृद्ध जोड़े का भतीजा सभी एक ही घर या अपार्टमेंट में रहते हैं। तो वे सभी एक ही परिवार के सदस्य माने जाएंगे। परिवारों की प्रकृति की व्याख्या करें तो ऐतिहासिक दृष्टि से अधिकांश संस्कृतियों में परिवार पितृसत्तात्मक यानि पुरुष-प्रधान परिवार ही देखने में आते हैं। इनमें परिवार के सबसे बड़े पुरुष द्वारा ही परिवार के सभी कार्यों का संचालन अथवा निर्णय लिए जाते हैं। इसके साथ ही आदिवासी समाज सहित कुछ अन्य समाजों में मातृ सत्तात्मक परिवारों की पृष्ठभूमि देखने को मिलती है।

ऐसे परिवारों में परिवार की बुजुर्ग महिला की प्रधानता रहती है तथा परिवार एवं समाज के सभी निर्णय लेने में बुजुर्ग महिलाएं मुख्य भूमिका निभाती है। यह सभी परिवार संयुक्त परिवार का एक रूप है जहां तीन पीढ़ियां एक साथ रहती हैं। लेकिन समय के साथ संयुक्त परिवारों की यह संकल्पना अब धूमिल हो रही है। औद्योगीकरण के साथ-साथ शहरीकरण ने जीवन और व्यावसायिक शैलियों में तीव्र परिवर्तन लाकर पारिवारिक संरचना में कई परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। लोग,विशेषकर युवा,खेती छोड़कर औद्योगिक श्रमिक बनने के लिए शहरी केंद्रों में चले गए। इस प्रक्रिया के कारण कई बड़े परिवार बिखर गए। इसके साथ ही युवाओं में अपने निर्णय खुद लेने की प्रवृत्ति तथा रोजी रोजगार के चलते अपने परिवार से दूर रहने के कारण भी एकल परिवार की संख्या बढ़ रही है।

स्वतंत्रता सेनानी चानकु महतो के मूर्ति का चाकुलिया में राज्यपाल करेगे अनावरण

झारखंड में उपेक्षित कुडमी समुदाय के लिए हर्ष का विषय

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चाकुलिया: झारखंड में स्वयं को उपेक्षित श्रेणी मान रहा कुडमी समुदाय के लिए बड़ी खुशखबरी है। झारखंड के गवर्नर पूर्वी सिंहभूम में स्वतंत्रता सेनानी चानकु महतो का मूर्ति का अनावरण करने पहुंचने वाले हैं ।जिसका जायजा आज जमशेदपुर जिले के अधिकारियों ने स्थल विशेष पर पहुंच कर ली । सिहभूम चाकुलिया प्रखंड के भालुकबिंदा के पास 15 मई को महामहिम राज्यपाल संतोष गंगवार शहीद स्वतंत्रता सेनानी शहीद चानकु महतो स्मारक स्थल और पंडाल का निरीक्षण किया। एडीएम अनिकेत सचान और ग्रामीण एसपी ऋषभ गर्ग ने पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। इस मौके पर घाटशिला के एसडीपीओ अजित कुमार कुजूर, मुसाबनी के डीएसपी संदीप भगत, घाटशिला के डीसीएलआर नीद निखील सुरीन, चाकुलिया के अंचल अधिकारी नवीन पुरती, प्रखंड विकास पदाधिकारी आरती मुंडा उपस्थित थे।

झारखंड में पैंतालीस सौ पे ग्रेड नीचे कर्मियों को पच्चीस हजार का मोबाइल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा पदाधिकारियों रू25,000 के नये मोबाइल फोन और 500रू रिचार्ज रिचार्ज राशि देने के संशोधित प्रस्ताव को मंगलवार अमली जामा पहनाया गया ।

संशोधित प्रस्ताव के तहत राज्य सरकार के सभी विभागों और कार्यालयों में कार्यरत वैसे राजपत्रित कर्मी जो पे-मैट्रिक्स लेवल-9 श्रेणी (5400 पे ग्रेड) से नीचे आते हैं, उन्हें अब 25 हजार रुपए तक का मोबाइल और प्रति माह 500 रुपए रिचार्ज के लिए दिए जाएंगे। इससे पहले 30 हजार रुपए का मोबाइल और प्रतिमाह 750 रुपए देने का निर्णय हुआ था, जिसे वित्त विभाग ने स्थगित कर दिया था। आइए जानते हैं मोबाइल के लिए किन कर्मचारियों को पैसे दिए जाएंगे।

झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार ने पहले जारी की गई लिस्ट में कुछ सुधार किया है। अब मोबाइल खरीदने के पैसे संशोधित प्रस्ताव के बाद

बता दें कि राज्य मंत्रिपरिषद ने बीते साल 24 जुलाई को मंत्री से लेकर राजपत्रित पदाधिकारियों को मोबाइल खरीदने और रिचार्ज की सुविधा दिए जाने का फैसला लिया था।

प्रशाखा पदाधिकारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी, जिला गव्य विकास पदाधिकारी, जिला खनन पदाधिकारी, सहायक अभियोजन पदाधिकारी, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा सहित अन्य पदाधिकारियों को मिलेगी। संशोधित प्रस्ताव के बाद हेमंत सोरेन सरकार कर्मचारियों को मोबाइल के साथ-साथ अब रिचार्ज के पैसे भी देगी।

बता दें कि राज्य मंत्रिपरिषद ने बीते साल 24 जुलाई को मंत्री से लेकर राजपत्रित पदाधिकारियों को मोबाइल खरीदने और रिचार्ज की सुविधा दिए जाने का फैसला लिया था। इसके फैसले के बाद वित्त विभाग ने 30 जुलाई 2024 को अधिसूचना जारी कर आदेश जारी किया था। हालांकि वित्त विभाग ने कार्यपालक आदेश के तहत 28 मार्च 2025 को पे मैट्रिक्स लेवेल-9 के राजपत्रित पदाधिकारियों को दी गई इस सुविधा को स्थगित कर दिया था। बाद में इस पर झारखंड सचिवालय सेवा संघ ने नाराजगी जताई थी। अब दूसरी लिस्ट जारी की गई है, जिसमें ज्यादा सरकारी कर्मचारियों को भी मोबाइल खरीदने के लिए पैसे दिए जाएंगे।

बीर जवान देबराज ने त्रिरंगा केलिए अपनी पत्नी को खो दिया

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : देवराज ने तिरंगे के सम्मान और हमारी विविधता की रक्षा के लिए अपना पत्नी जीवन त्याग दिया। लेकिन हम उसे, उसके परिवार, समाज और सरकार को यह गारंटी नहीं दे सके कि हम आपके साथ हैं। हम सचमुच शर्मिंदा हैं। यह आरोप है कि हमने देब की बीमार पत्नी लिपि को पर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में लापरवाही बरती है, जिन्होंने तिरंगे को ऊंचा उठाने का बड़ा वादा किया था, इस लापरवाही के लिए कड़ी सजा मिलनी चाहिए। हम विभिन्न राजनीतिक दल और संगठन केवल राजनीतिक लाभ के लिए झंडों के साथ रैलियां कर रहे हैं, लेकिन हम तिरंगे के लिए अपनी जान, खुशी और पारिवारिक खुशियों को जोखिम में डालने वाले वीर सैनिकों के परिवारों को उचित सम्मान, सुरक्षा और सेवा प्रदान करने में असमर्थ हैं। क्योंकि सैनिक अपने परिवार को समाज और सरकार के भरोसे छोड़कर युद्ध के मैदान में जाता है। हमने उन बहादुर सैनिकों का अपमान किया है और अप्रत्यक्ष रूप से तिरंगे का भी अपमान किया है। देबराज ने इंडियन आर्मी मे जॉब करते हैं । अरुणाचल प्रदेश मे पोस्टिंग हुआ था। छुटी लेके अपनी पत्नी पेग्नेंट थी , उनको बुर्ला (भीमसार) हॉस्पताल मे एडमिट किया । भारत पाकिस्तान युद्ध शुरु हो गया इसीलिए तुरंत कार्य मे जोग देने केलिए मेसेज आया वो पत्नी को हस्पताल मे छोड़ के चल गिया ।इधर 13 दिन तक हॉस्पताल स्टॉफ कुछ इलाज नहीं करने से उनकी मृत्यु हो गया ।

जन्नत में उथल-पुथल: तेल टैंकर पर 21 पाकिस्तानी नाविक

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : तेल टैंकर एकताटी सिरेन-2 बुधवार को पारादीप पोर्ट एसपीएम (सिंगल प्वाइंट मूरिंग सिस्टम) बर्थ पर पहुंचेगा। मंगलवार को खुलासा हुआ कि जहाज पर सवार 25 नाविकों में से 21 पाकिस्तानी थे। आव्रजन विभाग ने इस संबंध में तत्परता दिखाई है। आव्रजन विभाग ने समुद्री पुलिस और पारादीप बंदरगाह प्रशासन को सूचित किया है कि माल उतारे जाने तक सावधानी बरती जाए, क्योंकि जहाज पर एक पाकिस्तानी नाविक भी है।क्योंकि पाकिस्तानी नागरिकों के भारतीय सीमा में प्रवेश पर विदेशी प्रतिबंध हैं। उक्त जहाज पर हांगकांग का झंडा लहरा रहा है। दक्षिण कोरिया से 135 मीट्रिक टन कच्चा तेल आयात किया जा रहा है। बंदरगाह की डीटीआर (दैनिक यातायात रिपोर्ट) से पता चलता है कि उक्त तेल बुधवार को एसपीएम बर्थ पर छोड़ा जाएगा। आव्रजन विभाग ने पुष्टि की है कि नाविकों में 21 पाकिस्तानी, दो भारतीय, एक श्रीलंकाई और एक थाई नागरिक शामिल हैं। पारादीप बंदरगाह एसपीएम बंदरगाह से 20 किमी दूर है। दूर समुद्र में एक जहाज है। वहां, फ्लोटिंग बर्थ को एसपीएम कहा जाता है। वहां केवल कच्चे तेल को ही बड़े तेल टैंकरों से पाइपलाइन के माध्यम से उतारा जाता है। जहाज को बुधवार को बंदरगाह पर लाने की मंजूरी मिल गई है। लेकिन निष्कासन की निगरानी अंत तक करने का आदेश दिया गया है। यहां सवाल यह उठता है कि मरीन पुलिस की गश्ती नाव अभी तक महानदी के मुहाने को पार नहीं कर पाई है। बुधवार को पुलिस एसपीएम तक कैसे पहुंचेगी, इसको लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं।

संस्कार व्यक्ति के विचारों, मूल्यों, और व्यवहार को आकार देते हैं

दोस्ती को परिभाषित करने के लिए, हमें यह समझना होगा कि दोस्ती क्या है और क्या नहीं है।दोस्ती की परिभाषा सबके लिए अलग अलग हो सकती है,

दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो निस्वार्थ, विश्वास, और समर्थन पर आधारित होता है। दोस्ती में हम एक दूसरे के साथ खुशियाँ और दुख बांटते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं, और एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

दोस्ती में कोई लालच नहीं होनी चाहिए। हमें अपने दोस्तों से कुछ पाने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए, बल्कि हमें अपने दोस्तों के लिए कुछ देने की इच्छा रखनी चाहिए।

दोस्ती को परिभाषित करने के लिए, हमें यह भी समझना होगा कि दोस्ती क्या नहीं है। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता नहीं है जो केवल अपने फायदे के लिए बनाया जाता है। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता नहीं है जो केवल तब तक रहता है जब तक हमें कुछ पाने को मिलता है।

दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हमेशा रहता है, चाहे हमें कुछ पाने को मिले या न मिले। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हमें मजबूत बनाता है, हमें खुशी देता है, और हमें जीवन के हर मोड़ पर साथ देता है। दोस्ती किसी भी व्यक्ति से हो सकती है, चाहे वह महिला हो या पुरुष। दोस्ती का आधार लिंग, उम्र, धर्म, जाति या किसी भी अन्य कारक पर नहीं होना चाहिए। दोस्ती का आधार विश्वास, समर्थन, और आपसी समझ पर होना चाहिए। जब हम किसी व्यक्ति के साथ दोस्ती करते हैं, तो हमें उनकी भावनाओं, विचारों और जरूरतों का सम्मान करना चाहिए। महिला और पुरुष दोनों ही एक दूसरे के साथ दोस्ती कर सकते हैं और एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। दोस्ती में लिंग का कोई महत्व नहीं है, बल्कि दो व्यक्तियों के बीच का संबंध और आपसी समझ महत्वपूर्ण है।

विपरीत लिंग के बीच स्वस्थ मित्रता होना या न होना यह एक जटिल और व्यक्तिगत विषय है, और इसका उत्तर हर किसी के लिए अलग-अलग हो सकता है। लेकिन मैं आपको बताना चाहूंगा कि, विपरीत लिंग के बीच स्वस्थ मित्रता संभव है, लेकिन इसके लिए दोनों पक्षों को कुछ बातों का ध्यान रखना होगा।

दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की स्पष्टता और समझ होनी चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका रिश्ता मित्रता है, न कि प्रेम। दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की सीमाएँ समझनी चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं।

दोनों पक्षों को एक दूसरे के प्रति विश्वास और सम्मान होना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका रिश्ता आपसी विश्वास और सम्मान पर आधारित है।दोनों पक्षों को खुलकर और ईमानदारी से संवार करना चाहिए। उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को साझा करना चाहिए।

अब, यदि आप पूछते हैं कि क्या यह रिश्ता धीरे-धीरे प्रेम में बदल सकता है, तो इसका उत्तर है - हाँ, यह संभव है। लेकिन इसके लिए दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की दिशा को समझना होगा और अपने विचारों और भावनाओं को साझा करना होगा। यह भी महत्वपूर्ण है कि दोनों पक्षों को अपने रिश्ते की सीमाएँ समझनी चाहिए और उन्हें पार नहीं करना चाहिए। यदि वे अपने रिश्ते को प्रेम में बदलना चाहते हैं, तो उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को साझा करना चाहिए और अपने रिश्ते की दिशा को समझना चाहिए।

मित्रता और प्रेम के बीच की रेखा बहुत पतली होती है, और कभी-कभी जब मित्रता विपरीत लिंग से हो तो यह रेखा इतनी धुंधली हो जाती है कि हमें यह समझने में मुश्किल होती है कि हमारे रिश्ते में क्या हो रहा है। जब हम किसी व्यक्ति के साथ मित्रता करते हैं, तो हम उनके साथ समय बिताते हैं, उनके साथ बातें करते हैं, और उनके साथ अपने विचारों और भावनाओं को साझा करते हैं। यह सब करने से हमें उनके प्रति एक गहरा जुड़ाव महसूस होता है, जो धीरे-धीरे प्रेम में परिवर्तित हो सकता है।

इसलिए, यह कहना कि मित्रता को प्रेम में परिणित होने में देर नहीं लगती, बिल्कुल सही है। लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि हम अपने रिश्तों को समझें और उन्हें सावधानी से संभालें। व्यक्ति के संस्कार विपरीत लिंग के साथ संबंधों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संस्कार व्यक्ति के विचारों, मूल्यों, और व्यवहार को आकार देते हैं, जो कि संबंधों में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

यदि व्यक्ति के संस्कार अच्छे हैं, तो वह विपरीत लिंग के साथ संबंधों में सम्मान, विश्वास, और सीमाओं का ध्यान रखेगा। वह अपने संबंधों में ईमानदारी, निष्ठा, और समर्पण का प्रदर्शन करेगा।

लेकिन यदि व्यक्ति के संस्कार खराब हैं, तो वह विपरीत लिंग के साथ संबंधों में अनुचित व्यवहार कर सकता है, जैसे कि अनुचित संबंध, धोखाधड़ी, या अपमानजनक व्यवहार।

इसलिए, व्यक्ति के संस्कार विपरीत लिंग के साथ संबंधों में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। अच्छे संस्कार व्यक्ति को स्वस्थ और सम्मानजनक संबंध बनाने में मदद करते हैं।

डॉ. मुश्ताक अलमद

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023